कथा

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

विश्वभारती
६।३, द्वारकानाथ ठाकुर लेन,
कलकत्ता

प्रकाशक का निवेदन

प्रायः हमारे पास हिन्दी-भाषा-भाषियों के पत्र आया करते हैं कि वे बंगला समझ तो लेते हैं, पर बंगला अक्षर पढ़ नहीं सकते ; अतः यदि हो सके तो विश्वकवि रवीन्द्रनाथ की कुछ रचनाएँ ज्यों-की-त्यों नागराक्षरों में प्रकाशित की जायँ। प्रस्तुत रचना इसी प्रकार की माँग को पूरा करने के लिये प्रकाशित की जा रही है। आशा है हिन्दी-भाषा-भाषी इससे कवीन्द्र की मूल रचना का आनन्द ले सकेंगे।

पाठकों के सुभीते के लिये बंगला उच्चारणों की कुछ विशेषताएँ नीचे स्पष्ट की जा रही हैं :-

(१) बंगला में अकार का उच्चारण हिन्दी अकार के समान नहीं होता, बल्कि प्राय : 'अ' और 'ओ' के बीच में होता है, जैसे अंग्रेज़ी के 'Not' में 'o'।

(२) बंगला में क्षकार का उच्चारण पद के आदि में हमेशा खकार होता है, जैसे—क्षण=खण। पर अन्यत्र इसका उच्चारण 'क्ख' होगा, जैसे—लक्षण=लक्खण।

(३) मकार के साथ जिस वर्ण का योग हो, वह वर्ण सानुनासिक द्वित्व होकर अकार का लोप कर देगा, जैसे—पद्म=पद्दँ। किन्तु पद के आदि में ऐसा हो तो द्वित्व नहीं होता, जैसे—स्मृति=सृँति।

(४) हमने पाठ में तत्सम संस्कृत शब्दों के विन्यास में व को व ही रखा है, लेकिन यह समझने के विचार से ही है। बंगला में वकार और बकार दोनों ही को बकार पढ़ा जाता है। इसी तरह मूर्द्धन्य 'ण' का उच्चारण सदा 'न' ही होता है।

(५) यकार का उच्चारण पद के आदि में जकार हो जाता है, जैसे—योग=जोग। किन्तु पद के मध्य तथा अंत में यकार ही होता है, जैसे—नयन=नयन; समय=समय। लेकिन अगर यकार में रेफ हो तो जकार हो जाता है, जैसे—धैर्य्य=धैर्ज्ज, सूर्य्य=सूर्ज्ज।

(६) मागधी प्राकृत की परंपरा के अनुसार बंगला में तीनों ही सकारों का उच्चारण तालव्य 'श' की तरह होता है। किन्तु दन्त्य 'स' के साथ किसी व्यंजन वर्ण का योग होने पर स का उच्चारण स ही रहता है, यथा—स्तर=स्तर।

(७) यदि किसी वर्ण का यकार अथवा वकार के साथ योग हो तो वह द्वित्व होकर यकार-वकार का लोप कर देगा, जैसे—नित्य=नित्त; वाद्य=बाद्द। किन्तु पद के आदि में केवल वकार का लोप होता है, जैसे—ज्वाला=जाला, द्वार=दार।

(८) पद के आदि में आनेवाले दीर्घ ईकार-ऊकार का उच्चारण प्रायः ह्रस्व होता है, जैसे—पूजा=पुजा,

ईश्वर=इश्वर। वैसे बंगला में ह्रस्व-दीर्घ की माप-तौल हिन्दी के समान पक्की नहीं है; वहाँ लचीलेपन के लिये काफ़ी गुंजाइश है।

(९) पद के अंत्य वर्ण का उच्चारण प्राय: हलन्त होता है, जैसे—संसार=संसार्, तोमार=तोमार्। लेकिन कविता में छंद के आग्रह पर वह अकार के उच्चारण के नियमानुसार भी चलता है, जैसे— 'बकुल-बागाने' को 'बकुल (ो)— बागाने' भी पढ़ा जा सकता है।

(१०) अनुस्वार के उच्चारण में 'ग' का अंश निहित रहता है, जैसे—हिमांशु=हिमांग्शु।

(११) एकार का उच्चारण एकार और ऐकार के बीच का-सा होता है, जैसे—एक=ऐक। किन्तु बंगला में 'ऐ' कार का उच्चारण 'ओइ'कार जैसा होता है, यथा—ऐश्वर्य="ओइश्शर्ज्ज"।

(१२) बंगला में 'व' के लिये 'ओया' विन्यास प्रयुक्त होता है, जैसे, प्रस्तुत पुस्तक में पृष्ठ १७ पर आठवीं पंक्ति में "हओया" का उच्चारण "हवा" होगा।

१ जनवरी, १९४६

उत्सर्ग

सुहृद्वर श्रीयुक्त जगदीशचन्द्र वसु विज्ञानाचार्य
करकमलेषु

सत्य रत्न तुमि दिले,—परिवर्ते तार
कथा ओ कल्पना मात्र दिनु उपहार।

शिलाइदह
अग्रहायण, १३०६ वं०

विज्ञापन

एइ ग्रन्थे ये-सकल बौद्ध कथा वर्णित हइयाछे, ताहा राजेन्द्र-लाल मित्र-संकलित नेपाली बौद्ध साहित्य संबंधीय इंग्रेजी ग्रन्थ हइते गृहीत। राजपूत-काहिनीगुलि टाड-एर राजस्थान, ओ शिख विवरणगुलि दुइ-एकटि इंग्रेजी शिख इतिहास हइते उद्धार करा हइयाछे। भक्तमाल हइते वैष्णव गल्पगुलि प्राप्त हइयाछे। मूलेर सहित एइ कवितागुलिर किछु-किछु प्रभेद लक्षित हइबे,—आशा करि, सेइ परिवर्तनेर जन्य साहित्य-विधानमते दण्डनीय गण्य हइब ना।

वं० स० १३०६ ग्रन्थकार

कथा कओ, कथा कओ
अनादि अतीत ! अनन्त राते
केन बसे चेये रओ ।
कथा कओ, कथा कओ ।
युग युगान्त ढाले तार कथा
तोमार सागरतले,
कत जीवनेर कत धारा एसे
मिशाय तोमार जले ।
सेथा एसे तार स्रोत नाहि आर,
कलकलभाष नीरव ताहार,—
तरंगहीन भीषण मौन,
तुमि तारे कोथा लओ ।
हे अतीत ! तुमि हृदये आमार
कथा कओ, कथा कओ ।

कथा कओ, कथा कओ ।
स्तब्ध अतीत ! हे गोपनचारी !
अचेतन तुमि नओ—
कथा केन नाहि कओ ।

तव सञ्चार शुनेछि आमार
मर्मर माझखाने,
कत दिवसेर कत संचय
रेखे याओ मोर प्राणे ।
हे अतीत ! तुमि भुवने भुवने
काज करे याओ गोपने गोपने,
मुखर दिनेर चपलता-माझे
स्थिर हये तुमि रओ ।
हे अतीत तुमि गोपने हृदये
कथा कओ, कथा कओ ।

कथा कओ, कथा कओ ।
कोनो कथा कभु हाराओनि तुमि
सब तुमि तुले लओ,—
कथा कओ, कथा कओ ।
तुमि जीवनेर पाताय पाताय
अदृश्य लिपि दिया,
पितामहदेर काहिनी लिखिछ
मज्जाय मिशाइया ।

याहादेर कथा भुलेछे सबाइ
तुमि ताहादेर किछु भोलो नाइ,
विस्मृत यत   नारव काहिनी
  स्तंभित हये बओ।
भाषा दाओ तारे, हे मुनि अतीत, —
  कथा कओ, कथा कओ।

कथा

श्रेष्ठ भिक्षा

(अवदानशतक)

"प्रभु बुद्ध लागि आमि भिक्षा मागि,
ओगो पुरवासी, के रयेछ जागि',"—
अनाथ-पिण्डद* कहिला अम्बुद-
निनादे।
सद्य मेलितेछे तरुण तपन
आलस्ये अरुण सहास्य लोचन
श्रावस्तिपुरीर गगन-लगन-
प्रासादे।

---

* अनाथ-पिण्डद बुद्धेर एकजन प्रधान शिष्य छिलेन।

वैतालिकदल सुप्तिते शयान
एखनो धरेनि माङ्गलिक गान,
द्विधाभरे पिक मृदु कुहुतान
कुहरे।
भिक्षु कहे डाकि'—"हे निद्रित पुर,
देह भिक्षा मोरे, करो निद्रा दूर"—
सुप्त पौरजन शुनि' सेइ सुर
शिहरे।

साधु कहे,—"शुन, मेघ बरिषार
निजेरे नाशिया देय वृष्टि-धार ;
सब धर्ममाझे त्याग-धर्म सार
भुवने।"
कैलासशिखर हते दूरागत
भैरवेर महा-संगीतेर मतो
से वाणी मन्द्रिल सुखतन्द्रारत
भवने।

राजा जागि' भावे वृथा राज्य धन,
गृही भावे मिछा तुच्छ आयोजन,
अश्रु अकारणे करे विसर्जन
बालिका।

ये ललित सुखे हृदय अधीर,
मने होलो ताहा गत यामिनीर
स्खलित दलित शुष्क कामिनीर
मालिका।

वातायन खुले याय घरे घरे,
घुम-भाङ्गा आँखि फुटे थरे थरे
अन्धकार पथ कौतूहल भरे
नेहारि'।
"जागो, भिक्षा दाओ।" सबे डाकि' डाकि'
सुप्त सौधे तुलि, निद्राहीन आँखि,
शून्य राजबाटे चलेछे एकाकी
भिखारी।

फेलि दिल पथे वणिक-धनिका,
मुठि मुठि तुलि' रतन-कणिका,
केह कण्ठहार, माथार मणिका
केह गो।
धनी स्वर्ण आने थालि पुरे पुरे,
साधु नाहि चाहे, प'ड़े थाके दूरे,
भिक्षु कहे—"भिक्षा आमार प्रभुरे
देह गो।"

वसने भूषणे ढाकि गेल धूलि,
कनके रतने खेलिल बिजुलि,
सन्न्यासी फुकारे लये शून्य झुलि
सघने :—
"ओगो पौरजन, करो अवधान,
भिक्षुश्रेष्ठ तिनि, बुद्ध भगवान,
देह ताँरे निज सर्वश्रेष्ठ दान
यतने।"

फिरे याय राजा, फिरे याय शेठ,
मिले ना प्रभुर योग्य कोनो भेट,
विशाल नगरी लाजे रहे हेँट-
आनने।
रौद्र उठे फुटे, जेगे उठे देश,
महानगरीर पथ होलो शेष,
पुरप्रान्ते साधु करिला प्रवेश
कानने।

दीन नारी एक भूतल-शयन
ना छिल ताहार अशन भूषण,
से आसि' नमिल साधुर चरण-
कमले।

अरण्य-आड़ाले रहि, कोनोमते
एक मात्र वास निल गात्र हते,
वाहुटि बाड़ाये फेलि दिल पथे
भूतले ।

भिक्षु ऊर्ध्वभुजे करे जय नाद,
कहे "धन्य मातः । करि आशीर्वाद,
महा भिक्षुकेर पुराइले साध
पलके ।"
चलिल सन्न्यासी त्यजिया नगर
छिन्न चीरखानि लये शिरोपर,
सँपिते बुद्धेर चरण-नखर-
आलोके ।

५इ कार्तिक, १३०४ (सं० १९५४ वि०) ।

प्रतिनिधि

बसिया प्रभात काले सेतारार दुर्गभाले
शिवाजि हेरिला एकदिन—
रामदास, गुरु ताँर, भिक्षा मागि' द्वार द्वार
फिरिछेन येन अन्नहीन।
भाबिला, ए की ए काण्ड। गुरुजिर भिक्षाभाण्ड,
घरे यार नाइ दैन्य-लेश!
सब याँर हस्तगत, राज्येश्वर पदानत,
ताँरो नाइ वासनार शेष!

ए केवल दिने रात्रे जल ढेले फुटो पात्रे
वृथा चेष्टा तृष्णा मिटाबारे।—
कहिला, "देखिते हबे कतखानि दिले तबे
भिक्षा-झुलि भरे एकेबारे।"

तखनि लेखनी आनि' की लिखि' दिला की जानि,
बालाजिरे कहिला डाकाये,
"गुरु यबे भिक्षा-आशे आसिबेन दुर्ग-पाशे
एइ लिपि दियो ताँर पाये।"

गुरु चलेछेन गेये, सम्मुखे चलेछे धेये
कत पान्थ, कत अश्वरथ ;
"हे भवेश, हे शङ्कर, सबारे दियेछ घर,
आमारे दियेछ शुधु पथ।
अन्नपूर्णा मा आमार लयेछे विश्वेर भार,
सुखे आछे सर्व चराचर,—
मोरे तुमि हे भिखारी, मा'र काछ हते काड़ि
करेछ आपन अनुचर।"

समापन करि' गान सारिया मध्याह्न-स्नान
दुर्गद्वारे आसिला यखन—
बालाजि नमिया ताँरे दाँडाइल एकधारे
पदमूले राखिया लिखन ।
गुरु कौतूहलभरे तुलिया लइला करे,
पड़िया देखिला पत्रखानि,—
वन्दि' ताँर पादपद्म शिवाजि सँपिछे अद्य
ताँरे निज राज्य-राजधानी।

परदिने रामदास गेलेन राजार पाश,
कहिलेन, "पुत्र, कह शुनि,
राज्य यदि मोरे दिबे की काजे लागिबे एबे
कोन् गुण आछे तव, गुणी।"
"तोमारि दासत्वे प्राण आनन्दे करिब दान"—
शिवाजि कहिला नमि' ताँरे।
गुरु कहे—"एइ झुलि लह तबे स्कन्धे तुलि'
चलो आजि भिक्षा करिबारे।"

शिवाजि गुरुर साथे भिक्षापात्र लये हाते
फिरिलेन पुरद्वारे द्वारे।
नृपे हेरि' छेले मेये भये घरे याय धेये
डेके आने पितारे मातारे।
अतुल ऐश्वर्ये रत, ताँर भिखारीर व्रत,
ए-ये देखि जले भासे शिला।
भिक्षा देय लज्जाभरे, हस्त काँपे थरथरे,
भावे, इहा महतेर लीला।

दुर्गे द्विप्रहर बाजे, क्षान्त दिया कर्मकाजे
विश्राम करिछे पुरवासी।
एकतारे दिये तान रामदास गाहे गान
आनन्दे नयनजले भासि',—

ओहे त्रिभुवन-पति, बुझि ना तोमार मति,
किछुइ अभाव तव नाहि,
हृदये हृदये तबु भिक्षा मागि फिरो प्रभु,
सबार सर्वस्व-धन चाहि।"

अवशेषे दिवसान्ते नगरेर एक प्रान्ते
नदीकूले सन्ध्या-स्नान सारि'—
भिक्षा-अन्न राँधि सुखे गुरु किछु दिला मुखे
प्रसाद् पाइल शिष्य ताँरि।
राजा तबे कहे हासि',— "नृपतिर गर्व नाशि
करियाछ पथेर भिक्षुक ;
प्रस्तुत रयेछे दास,— आरो कि वा अभिलाष,
गुरु काछे लब गुरु दुख।"

गुरु कहे "तबे शोन्, करिलि कठिन पण,
अनुरूप निते हबे भार,
एइ आमि दिनु कये मोर नामे मोर हये
राज्य तुमि लह पुनर्वार।
तोमारे करिल विधि भिक्षुकेर प्रतिनिधि,
राज्येश्वर दीन उदासीन ;
पालिबे ये राजधर्म जेनो ताहा मोर कर्म,
राज्य लये र'बे राज्यहीन।—

"वत्स, तबे एइ लह मोर आशीर्वादसह
आमार गेरुया गात्रवास ;
बैरागीर उत्तरीय पताका करिया नियो ;"—
कहिलेन गुरु रामदास ।
नृपशिष्य नतशिरे बसि रहे नदीतीरे,
चिन्तारशि घनाय ललाटे ।
थामिल राखाल-वेणु गोठे फिरे गेल धेनु,
परपारे सूर्य गेल पाटे ।

पुरबीते धरि' तान, एकमने रचि गान
गाहिते लागिला रामदास,—
आमारे राजार साजे बसाये संसार माझे
के तुमि आड़ाले करो वास ।
हे राजा, रेखेछि आनि, तोमारि पादुकाखानि,
आमि थाकि पादपीठतले ;
सन्ध्या हये एल ओइ आर कत बसे रइ
तव राज्ये तुमि एसो चले ।"*

६ कार्तिक, १३०४ (इं० १८५४ वि०)

---

* ऐक्वर्थ साहेब कयेकटि माराठि गाथार ये इंरेजि अनुवाद-ग्रन्थ प्रकाश करियाछेन, ताहारइ भूमिका हइते वर्णित घटना गृहीत । शिवाजिर गेरुया पताका "भागोया झण्डा" नामे ख्यात ।

ब्राह्मण

(छान्दोग्योपनिषत् । ४ प्रपाठक । ४ अध्याय)

अन्धकार वनच्छाये सरस्वतीतीरे
अस्त गेछे सन्ध्यासूर्य ; आसियाछे फिरे'
निस्तब्ध आश्रम माझे ऋषिपुत्रगण
मस्तके समिध-भार करि' आहरण
वनान्तर हते ; फिराये एनेछे डाकि'
तपोवन-गोष्ठगृहे स्निग्धशान्त आँखि
श्रान्त होमधेनुगणे ; करि' समापन
सन्ध्यास्नान, सबे मिलि लयेछे आसन
गुरु गौतमेरे घिरि' कुटीर-प्राङ्गणे
होमाग्नि-आलोके । शून्ये अनन्त गगने
ध्यानमग्न महाशान्ति ; नक्षत्रमण्डली
सारि सारि बसियाछे स्तब्धकुतूहली
निःशब्द शिष्येर मतो । निभृत आश्रम
उठिल चकित हये ; महर्षि गौतम
कहिलेन—"वत्सगण, ब्रह्मविद्या कहि,
करो अवधान ।"

हेनकाले अर्घ्य बहि'
करपुट भरि', पशिला प्राङ्गणतले
तरुण बालक ; वन्दि फलफुलदले,
ऋषिर चरण-पद्म नमि' भक्तिभरे
कहिला कोकिलकण्ठे सुधास्निग्धस्वरे—
"भगवन, ब्रह्मविद्याशिक्षा-अभिलाषी
आसियाछि दीक्षातरे कुशक्षेत्रवासी
सत्यकाम नाम मोर ।"

शुनि' स्मितहासे
ब्रह्मर्षि कहिला तारे स्नेहशान्त भाषे
"कुशल हउक सौम्य । गोत्र की तोमार ।
वत्स, शुधु ब्राह्मणेर आछे अधिकार
ब्रह्मविद्यालाभे ।"—
बालक कहिला धीरे—
"भगवन, गोत्र नाहि जानि । जननीरे
शुधाये आसिब कल्य, करो अनुमति ।"
एत कहि ऋषिपदे करिया प्रणति
गेल चलि सत्यकाम, घन अन्धकार
वनवीथि दिया पदव्रजे हये पार

क्षीण स्वच्छ शान्त सरस्वती, वालुतीरे
सुप्तिमौन ग्रामप्रान्ते जननी–कुटीरे
करिला प्रवेश।

घरे सन्ध्यादीप ज्वाला ;
दाँड़ाये दुयार धरि' जननी जबाला
पुत्रपथ चाहि', हेरि', त'रे वक्षे टानि'
आघ्राण करिया शिर कहिलेन वाणी
कल्याण कुशल। शुधाइला सत्यकाम—
"कह गो जननी, मोर पितार की नाम,
की वंशे जनम। गियाछिनु दीक्षातरे
गौतमेर काछे,—गुरु कहिलेन मोरे,
'वत्स, शुधु ब्राह्मणेर आछे अधिकार
ब्रह्मविद्यालाभे।'—मातः की गोत्र आमार।"
शुनि' कथा, मृदुकण्ठे अवनत मुखे
कहिला जननी,—"यौवने दारिद्र्यदुखे
बहुपरिचर्या करि' पेयेछिनु तोरे,
जन्मेछिस भर्तृहीना जबालार क्रोड़े,
गोत्र तव नाहि जानि, तात।"

परदिन
तपोवन–तरुशिरे प्रसन्न नवीन

जागिल प्रभात। यत तापस बालक
शिशिर-सुस्निग्ध येन तरुण आलोक,
भक्ति-अश्रु-धौत येन नव पुण्यच्छटा,—
प्रातःस्नात स्निग्धच्छवि आर्द्र सिक्त जटा,
शुचिशोभा सौम्यमूर्ति समुज्ज्वल काये
बसेछे वेष्टन करि' वृद्ध वटच्छाये
गुरु गौतमेरे। विहङ्ग-काकलीगान,
मधुप-गुञ्जनगीति, जल-कलतान,
तारि साथे उठितेछे गम्भीर मधुर
विचित्र तरुण कण्ठे सम्मिलित सुर
शान्त सामगीति।

हेनकाले सत्यकाम
काछे आसि' ऋषिपदे करिला प्रणाम,—
मेलिया उदार आँखि रहिला नीरवे।
आचार्य आशिस करि' शुधाइला तबे,—
"की गोत्र तोमार सौम्य, प्रिय-दरशन।"—
तुलि' शिर कहिला बालक,—"भगवन्,
नाहि जानि की गोत्र आमार। पुछिलाम
जननीरे,—कहिलेन तिनि,—'सत्यकाम,
बहुपरिचर्या करि' पेयेछिनु तोरे,
जन्मेछिस भर्तृहीना जबालार क्रोड़े—
गोत्र तव नाहि जानि।'

शुनि' से-बारता
छात्रगण मृदुस्वरे आरम्भिल कथा,—
मधुचक्रे लोष्ट्रपाते विक्षिप्त चञ्चल
पतङ्गेर मतो—सबे विस्मय-विकल,
केह वा हासिल केह करिल धिक्कार
लज्जाहीन अनार्येर हेरि अहंकार।
उठिला गौतम ऋषि छाड़िया आसन
वाहु मेलि'—बालकेरे करि' आलिङ्गन
कहिलेन, अब्राह्मण नह तुमि तात।
तुमि द्विजोत्तम, तुमि सत्यकुलजात।"

७ फाल्गुन, १३०१ (सं० १९५१ बि०)

मस्तक विक्रय

(महावस्त्वदान)

कोशल नृपतिर तुलना नाइ,
जगत् जुड़ि' यशोगाथा ;
क्षीणेर तिनि सदा शरण ठाँइ,
दीनेर तिनि पितामाता ।
से-कथा काशीराज शुनिते पेये
ज्वलिया मरे अभिमाने ;—
"आमार प्रजागण आमार चेये
ताहारे बड़ो करि' माने ?
आमार हते यार आसन निचे
तार दान होलो बेशि ।
धर्म दया माया सकलि मिछे,
ए शुधु तार रेषारेषि ।"
कहिला "सेनापति, धरो कृपाण,
सैन्य करो सब जड़ो ।
आमार चेये हबे पुण्यवान,
स्पर्धा बाड़ियाछे बड़ो ।"

चलिला काशीराज युद्धसाजे—
कोशलराज हारि' रणे
राज्य छाड़ि' दिया क्षुब्ध लाजे
पलाये गेल दूर-वने।
काशीर राजा हासि' कहे तखन
आपन सभासद माझे—
"क्षमता आछे यार राखिते धन
तारेइ दाता हओया साजे॥"
सकले काँदि' बले—"दारुण राहु
एमन चाँदेरेओ हाने?
लक्ष्मी खोँजे शुधु बलीर वाहु
चाहे ना धर्मेर पाने।"—
"आमरा हइलाम पितृहारा"—
काँदिया कहे दशदिक्—
"सकल जगतेर वन्धु याँरा
ताँदेर शत्रुरे धिक्॥"
शुनिया काशीराज उठिल रागि'
"नगरे केन एत शोक।
आमि तो आछि तबु काहार लागि'
काँदिया मरे यत लोक।
आमार वाहुबले हारिया तबु
आमारे करिबे से जय।

अरिर शेष ना राखिबे कभु,
शास्त्रे एइ मतो कय ।
मन्त्री, रटि' दाओ नगर माझे,
घोषणा करो चारिधारे—
ये धरि' आनि' दिबे कोशलराजे
कनक शत दिब ता'रे ।"
फिरिया राजदूत सकल बाटि
रटना करे दिनरात ।
ये शोने आँखि मुदि' रसना काटि'
शिहरि' काने देय हात ॥
राज्यहीन राजा गहने फिरे
मलिनचीर दीनवेशे,
पथिक एकजन अश्रुनीरे
एकदा शुधाइल एसे,—
"कोथा गो वनवासी, वनेर शेष,
कोशले याब कोन् मुखे ।"
शुनिया राजा कहे,—"अभागा देश,
सेथाय याबे कोन् दुखे ।"
पथिक कहे,—"आमि वणिक्‌जाति,
डुबिया गेछे मोर तरी ।
एखन द्वारे द्वारे हस्त पाति'
केमने रबो प्राण धरि' ।

करुणा पारावार कोशलपति,
शुनेछि नाम चारिधारे,
अनाथनाथ तिनि दीनेर गति,
चलेछे दीन ताँरि द्वारे।"
शुनिया नृपसुत ईषत् हेसे
रुधिला नयनेर वारि,
नीरवे क्षणकाल भाबिया शेषे
कहिला निःश्वास छाड़ि'—
"पान्थ, येथा तव वासना पुरे
देखाये दिब तारि पथ।
एसेछ बहु दुखे अनेक दूरे
सिद्ध हबे मनोरथ॥"
बसिया काशीराज सभार माझे;
दाँड़ाल जटाधारी एसे।
"हेथाय आगमन किसेर काजे।"
नृपति शुधाइल हेसे।
"कोशलराज आमि, वन-भवन"
कहिला वनवासी धीरे,—
"आमार धरा पेले या दिबे पण
देह ता मोर साथीटिरे।"
उठिल चमकिया सभार लोके,
नीरव होलो गृहतल,

वर्म-आवरित शरीर चोखे
अश्रु करे छलछल।
मौन रहि राजा क्षणेक तरे
हासिया कहे—"ओहे वन्दी,
मरिया हबे जयी आमार 'परे
एमनि करियाछ फन्दि!
तोमार से-आशाय हानिब बाज,
जिनिब आजिकार रणे,
राज्य फिरि' दिब हे महाराज,
हृदय दिब तारि सने।"
जीर्ण चीर-परा वनवासीरे
बसाल नृप राजासने,
मुकुट तुलि' दिल मलिन शिरे
धन्य कहे पुरजने।

२१ कार्तिक, १३०४ (सं १९५४)

———

पूजारिनी

(अवदानशतक)

नृपति बिम्बिसार
नमिया बुद्धे मागिया लइल,
पाद नख–कणा ताँर।
स्थापिया निभृत प्रासाद कानने
ताहारि उपरे रचिला यतने
अति अपरूप शिलामय स्तूप
शिल्प-शोभार सार।

सन्ध्यावेलाय शुचिवास परि'
राजवधू राजबाला
आसितेन फुल साजाये डालाय,
स्तूपपदमूले सोनार थालाय
आपनार हाते दितेन ज्वालाये
कनक-प्रदीपमाला।

अजातशत्रु राजा होलो यबे,
पितार आसने आसि'
पितार धर्म शोणितेर स्रोते
मुछिया फेलिल राजपुरी हते

सँपिल यज्ञ अनल आलोते
बौद्धशास्त्रराशि ।

कहिल डाकिया अजातशत्रु
राजपुरनारी सबे,—
"वेद ब्राह्मण राजा छाड़ा आर
किछु नाइ भवे पूजा करिबार,
एइ क'टि कथा जेनो मने सार -
भुलिले विपद हबे ।"

से दिन शारद-दिवा अवसान,—
श्रीमती नामे से दासी,
पुण्यशीतल सलिले नाहिया
पुष्पप्रदीप थालाय बाहिया,
राजमहिषीर चरणे चाहिया
नीरवे दाँड़ाल आसि' ।

शिहरि' सभये महिषी कहिला—
"ए-कथा नाहि कि मने
अजातशत्रु करेछे रटना—
स्तूपे ये करिबे अर्घ्यरचना

शूलेर उपरे मरिबे से-जना
अथवा निर्वासने।"

सेथा हते फिरि गेल चलि धीरे
वधू अमितार घरे।
समुखे राखिया स्वर्ण-मुकुर
बाँधितेछिल से दीर्घ चिकुर,
आँकितेछिल से यत्ने सिँदुर
सीमन्त-सीमा 'परे।

श्रीमतीरे हेरि बाँकि गेल रेखा,
काँपि गेल तार हात,—
कहिल, "अबोध, की साहस-बले
एनेछिस पूजा, एखनि या चले,
के कोथा देखिबे, घटिबे ता हले
विषम विपद्पात।"

अस्त-रविर रश्मि-आभाय
खोला जानालार धारे
कुमारी शुक्ला बसि' एकाकिनी
पडिते निरत काव्य-काहिनी,

चमकि' उठिल शुनि' किङ्किणी
चाहिया देखिल द्वारे।

श्रीमतीरे हेरि' पुँथि राखि भूमे
द्रुतपदे गेल काछे।
कहे सावधाने तार काने काने,—
"राजार आदेश आजि के ना जाने,
एमन क'रे कि मरणेर पाने
छुटिया चलिते आछे।"

द्वार हते द्वारे फिरिल श्रीमती
लइया अर्घ्यथालि।
"हे पुरवासिनी" सबे डाकि' कय,—
"हयेछे प्रभुर पूजार समय"—
शुनि घरे घरे केह पाय भय,
केह देय तारे गालि।

दिवसेर शेष आलोक मिलाल
नगर सौध 'परे।
पथ जनहीन आँधारे विलीन,
कलकोलाहल हये एल क्षीण,

आरतिघण्टा ध्वनिल प्राचीन
राज देवालयघरे ।

शारद-निशिर स्वच्छ तिमिर,
तारा अगण्य ज्वले ।
सिंहदुयारे बाजिल विषाण,
वन्दीरा धरे सन्ध्यार तान,
"मन्त्रणासभा होलो समाधान"—
द्वारी फुकारिया बले ।

एमन समये हेरिल चमकि'
प्रासादे प्रहरी यत—
राजार विजन कानन माझारे
स्तूपपदमूले गहन आँधारे
ज्वलितेछे केन, येन सारे सारे
प्रदीपमालार मतो ।

मुक्तकृपाणे पुर-रक्षक
तखनि छुटिया आसि'
शुधाल—"के तुइ ओरे दुर्मति,
मरिबार तरे करिस आरति ।"

मधुर कण्ठे शुनिल—"श्रीमती
आमि बुद्धेर दासी।"

सेदिन शुभ्र पाषाण-फलके
पड़िल रक्त-लिखा।
सेदिन शारद स्वच्छ निशीथे
प्रासाद-कानने नीरवे निभृते
स्तूपपदमूले निबिल चकिते
शेष आरतिर शिखा।

१८ आश्विन, १३०६ (सं० १९५६)

अभिसार

(बोधिसत्त्वावदान-कल्पलता)

सन्न्यासी उपगुप्त
मथुरापुरीर प्राचीरेर तले
एकदा छिलेन सुप्त,—
नगरीर दीप निबेछे पवने,
दुयार रुद्ध पौर भवने,
निशीथेर तारा श्रावण-गगने
घन मेघे अवलुप्त।

काहार नूपुरशिञ्जित पद
सहसा बाजिल वक्षे।
सन्न्यासीवर चमकि' जागिल,
स्वप्नजड़िमा पलके भागिल,
रूढ़ दीपेर आलोक लागिल
क्षमा-सुन्दर चक्षे।

नगरीर नटी चले अभिसारे
यौवनमदे मत्ता।
अङ्गे आँचल सुनील बरन,
रुनुझुनु रवे बाजे आभरण ;
सन्न्यासी-गाये पड़िते चरण,
थामिल वासवदत्ता।

प्रदीप धरिया हेरिल ताँहार
नवीन गौरकान्ति,
सौम्य सहास तरुण बयान,
करुणाकिरणे विकच नयान,
शुभ्र ललाटे इन्दु-समान
भातिछे स्निग्ध शान्ति।

कहिल रमणी ललित कण्ठे
नयने जड़ित लज्जा ;
"क्षमा करो मोरे कुमार किशोर,
दया करो यदि गृहे चलो मोर,
ए धरणीतल कठिन कठोर,
ए नहे तोमार शय्या ।"

सन्न्यासी कहे करुण वचने,
"अयि लावण्यपुञ्जे ।
एखनो आमार समय हयनि,
येथाय चलेछ, याओ तुमि धनी,
समय ये दिन आसिबे, आपनि
याइब तोमार कुञ्जे ।"

सहसा झञ्झा तड़ित्‌शिखाय
मेलिल विपुल आस्य ।
रमणी काँपिया उठिल तरासे,
प्रलय-शङ्ख बाजिल बातासे,
आकाशे वज्र घोर परिहासे
हासिल अट्टहास्य ।

वर्ष तखनो हय नाइ शेष,
एसेछे चैत्र-सन्ध्या।
बातास हयेछे उतला आकुल,
पथ-तरुशाखे धरेछे मुकुल,
राजार कानने फुटेछे वकुल
पारुल रजनीगन्धा।

अति दूर हते आसिछे पवने
बाँशिर मदिर-मन्द्र।
जनहीन पुरी, पुरवासी सबे
गेछे मधुवने फुल उत्सवे,
शून्य नगरी निरखि' नीरवे
हासिछे पूर्णचन्द्र।

निर्जन पथे ज्योत्स्ना-आलोते
सन्न्यासी एका यात्री।
माथार उपरे तरुवीथिकार
कोकिल कुहरि' उठे बारबार,
एतदिन परे एसेछे कि ताँर
आजि अभिसार-रात्रि।

नगर छाड़ाये गेलेन दण्डी
बाहिर प्राचीर-प्रान्ते
दाँड़ालेन आसि' परिखार पारे,
आम्रवनेर छायार आँधारे
के ओइ रमणी प'ड़े एकधारे
ताँहार चरणोपान्ते।

निदारुण रोगे मारी-गुटिकाय
भरे गेछे तार अङ्ग,
रोगमसी-ढाला काली तनु तार
लये प्रजागणे पुर-परिखार
बाहिरे फेलेछे, करि' परिहार
विषाक्त तार सङ्ग।

सन्न्यासी बसि' आड़ष्ट शिर
तुलि निल निज अङ्गे।
ढालि' दिल जल शुष्क अधरे,
मन्त्र पड़िया दिल शिर 'परे,
लेपि' दिल देह आपनार करे
शीत चन्दनपङ्के।

झरिछे मुकुल, कूजिछे कोकिल,
यामिनी जोछनामत्ता ।
"के एसेछ तुमि ओगो दयामय"—
शुधाइल नारी सन्न्यासी कय—
"आजि रजनीते हयेछे समय,—
एसेछि वासवदत्ता ।"

१९ आश्विन, १३०६ (सं० १९५६)

परिशोध

(महावस्तवदान)

"राजकोष हते चुरि ! धरे आन् चोर,
नहिले, नगरपाल, रक्षा नाहि तोर,
मुण्ड रहिबे ना देहे !"—राजार शासने
रक्षिदल पथे पथे भवने भवने
चोर खुँजे खुजे फिरे । नगर-बाहिरे
छिल शुये वज्रसेन विदीर्ण मन्दिरे,
विदेशी वणिक् पान्थ तक्षशिलावासी ;
अश्व वेचिबार तरे एसेछिल काशी,
दस्युहस्ते खोयाइया निःस्व रिक्त शेषे
फिरिया चलितेछिल आपनार देशे

निराश्वासे। ताहारे धरिल चोर बलि';
हस्ते पदे बाँधि ता'र लोहार शिकलि
लइया चलिल वन्दिशाले।

सेइ क्षणे
सुन्दरी-प्रधाना श्यामा बसि' वातायने
प्रहर यापितेछिल आलस्ये कौतुके
पथेर प्रवाह हेरि';—नयन सम्मुखे
स्वप्नसम लोकयात्रा। सहसा शिहरि'
काँपिया कहिल श्यामा—"आहा मरि मरि
महेन्द्रनिन्दितकान्ति उन्नतदर्शन
कारे वन्दी क'रे आने चोरेर मतन
कठिन शृङ्खले। शीघ्र या लो सहचरी,
बल् गे नगरपाले मोर नाम करि'—
श्यामा डाकितेछे ता'रे; वन्दी साथे ल'ये
एकबार आसे येन ए क्षुद्र आलये
दया करि।"—श्यामार नामेर मन्त्रगुणे
उतला नगररक्षी आमन्त्रण शुने'
रोमाञ्चित; सत्वर पशिल गृहमाझे
पिछे वन्दी वज्रसेन नतशिर लाजे
आरक्त कपोल। कहे रक्षी हास्यभरे—
"अतिशय असमये अभाजन 'परे

अयाचित अनुग्रह,—चलेछि सम्प्रति
राजकार्ये,— सुदर्शने देह अनुमति।"
वज्रसेन तुलि' शिर सहसा कहिला—
"ए की लीला, हे सुन्दरी, ए की तव लीला।
पथ हते घरे आनि किसेर कौतुके
निर्दोष ए प्रवासीर अवमान-दुखे
करितेछ अवमान।"—शुनि श्यामा कहे,
"हाय गो विदेशी पान्थ, कौतुक ए नहे,
आमार अङ्गेते यत स्वर्ण अलंकार
समस्त सँपिया दिया शृङ्खल तोमार
निते पारि निज देहे; तव अपमाने
मोर अन्तरात्मा आजि अपमान माने।"
एत बलि' सिक्तपक्ष्म दुटि चक्षु दिया
समस्त लाञ्छना येन लइल मुछिया
विदेशीर अङ्ग हते। कहिल रक्षीरे
"आमार या आछे लये निर्दोष वन्दीरे
मुक्त क'रे दिये याओ।"—कहिल प्रहरी
"तव अनुनय आजि ठेलिनु सुन्दरी,
एत ए असाध्य काज। हृत राजकोष,
विना कारो प्राणपाते नृपतिर रोष
शान्ति मानिबे ना।"—धरि' प्रहरीर हात
कातरे कहिल श्यामा,—"शुधु दुटि रात

वन्दीरे बाँचाये रेखो ए मिनति करि।"
"राखिब तोमार कथा"—कहिल प्रहरी।

द्वितीय रात्रिर शेषे खुलि' वन्दीशाला
रमणी पशिल कक्षे, हाते दीप ज्वाला',
लोहार शृङ्खले बाँधा येथा वज्रसेन—
मृत्युर प्रभात चेये मौनी जपिछेन
इष्टनाम। रमणीर कटाक्ष-इङ्गिते
रक्षी आसि खुलि दिल शृङ्खल चकिते।
विस्मय-विह्वल नेत्रे वन्दी निरखिल
सेइ शुभ्र सुकोमल कमल-उन्मील
अपरूप मुख। कहिल गद्‌गदस्वरे—
"विकारेर विभीषिका-रजनीर 'परे
करधृत शुकतारा शुभ्र उषासम
के तुमि उदिले आसि' काराकक्षे मम—
मुमूर्षुर प्राणरूपा, मुक्तिरूपा अयि,
निष्ठुर नगरी माझे लक्ष्मी दयामयी।"—

"आमि दयामयी!" रमणीर उच्चहासे
चकिते उठिल जागि' नव भय त्रासे
भयंकर कारागार। हासिते हासिते
उन्मत्त उत्कट हास्य शोकाश्रुराशिते

शतधा पड़िल भाङि'। काँदिया कहिला—
"ए पुरीर पथमाझे यत आछे शिला
कठिन श्यामार मतो केह नाहि आर।"—
एत वलि' दृढ़बले धरि' हस्त तार
वज्रसेने लये गेल कारार वाहिरे।

तखन जागिछे उषा वरुणार तीरे,
पूर्व वनान्तरे। घाटे बाँधा आछे तरी।
"हे विदेशी एसो एसो"—कहिल सुन्दरी
दाँड़ाये नौकार 'परे—"हे आमार प्रिय,
शुधु एइ कथा मोर स्मरणे राखियो—
तोमा साथे एक स्रोते भासिलाम आमि
सकल बन्धन टुटि' हे हृदयस्वामी,
जीवन-मरण-प्रभु।" नौका दिल खुलि'।
दुइ तीरे वने वने गाहे पाखिगुलि
आनन्द-उत्सव-गान। प्रेयसीर मुख
दुइ वाहु दिया तुलि' भरि' निज बुक
वज्रसेन शुधाइल—"कह मोरे, प्रिये,
आमारे करेछ मुक्त की सम्पद दिये।
सम्पूर्ण जानिते चाहि अयि विदेशिनी,
ए दीन दरिद्रजन तव काछे ऋणी

कत ऋणे ।"—आलिङ्गन घनतर करि',
"से-कथा एखन नहे"—कहिल सुन्दरी ।
नौका भेसे चले याय पूर्ण वायुभरे
तूण स्रोतोवेगे । मध्य गगनेर 'परे
उदिल प्रचण्ड सूर्य । ग्रामवधूगण
गृहे फिरे गेछे करि' स्नान समापन
सिक्तवस्त्रे कांस्यघटे लये गङ्गाजल ।
भेङे गेछे प्रभातेर हाट ; कोलाहल
थेमे गेछे दुइ तीरे, जनपद-बाट
पान्थहीन ; वटतले पाषाणेर घाट,
सेथाय बाँधिल नौका स्नानाहार तरे
कर्णधार । तन्द्राघन वटशाखा 'परे
छायामग्न पक्षीनीड़ गीतशब्दहीन ।
अलस पतङ्ग शुधु गुञ्जे दीर्घ दिन ;
पक्वशस्यगन्धहरा मध्याह्नेर बाये
श्यामार घोमटा यबे फेलिल खसाये
अकस्मात्,—परिपूर्ण प्रणय-पीड़ाय
व्यथित व्याकुल वक्ष—कण्ठ रुद्धप्राय
वज्रसेन काने काने कहिल श्यामारे—
"क्षणिक शृङ्खल मुक्त करिया आमारे
बाँधियाछ अनन्त शृङ्खले । की करिया
साधिले दुःसाध्य व्रत कह बिबरिया ।

मोर लागि' की करेछ जानि यदि प्रिये
परिशोध दिब ताहा ए जीवन दिये
एइ मोर पण।" वस्त्र टानि मुख-'परि,
"से-कथा एखनो नहे"—कहिल सुन्दरी॥
गुटाये सोनार पाल सुदूरे नीरवे
दिनेर आलोकतरी चले गेल यबे
अस्त-अचलेर घाटे—तीर-उपवने
लागिल श्यामार नौका सन्ध्यार पवने।
शुक्ल चतुर्थीर चन्द्र अस्तगतप्राय,—
निस्तरङ्ग शान्त जले सुदीर्घ रेखाय
झिकिमिकि करे क्षीण आलो ; झिल्लिस्वने
तरुमूल-अन्धकार काँपिछे सघने
वीणार तन्त्रेर मतो। प्रदीप निबाये
तरी-वातायनतले दक्षिणेर बाये
घन-निःश्वसित मुखे युवकेर काँधे
हेलिया बसेछे श्यामा। पड़ेछे अबाधे
उन्मुक्त सुगन्ध केशराशि, सुकोमल
तरङ्गित तमोजाले छेये वक्षतल
विदेशीर—सुनिविड़ तन्द्राजालसम।
कहिल अस्फुटकण्ठे श्यामा—"प्रियतम,
तोमा लागि' या करेछि कठिन से काज,
सुकठिन—तारो चेये सुकठिन आज

से-कथा तोमारे बला। संक्षेपे से कब—
एकवार शुने मात्र मन हते तव
से-काहिनी मुछे फेलो।
बालक किशोर।
उत्तीय ताहार नाम, व्यर्थ प्रेमे मोर
उन्मत्त अधीर। से आमार अनुनये
तव चुरि-अपवाद निजस्कन्धे लये
दियेछे आपन प्राण। ए जीवने मम
सर्वाधिक पाप मोर, ओगो सर्वोत्तम,
करेछि तोमार लागि' ए मोर गौरव।"

क्षीण चन्द्र अस्त गेल। अरण्य नीरव
शत शत विहङ्गेर सुप्ति बहि' शिरे
दाँड़ाये रहिल स्तब्ध। अति धीरे धीरे
रमणीर कटि हते प्रियबाहुडोर
शिथिल पड़िल ख'से ; विच्छेद कठोर
निःशब्दे बसिल दोँहा माझे ; वाक्यहीन
वज्रसेन चेये रहे आड़ष्ट कठिन
पाषाणपुत्तलि ; माथा राखि' तार पाये
छिन्नलतासम श्यामा पड़िल लुटाये
आलिङ्गनच्युता ; मसीकृष्ण नदीनीरे
तीरेर तिमिरपुञ्ज घनाइल धीरे।

सहसा युवार जानु सबले बाँधिया
वाहुपाशे—आर्तनारी उठिल काँदिया
अश्रुहारा शुष्ककण्ठे—"क्षमा करो नाथ
ए पापेर याहा दण्ड से-अभिसम्पात
होक विधातार हाते निदारुणतर—
तोमा लागि या करेछि तुमि क्षमा करो।"
चरण काड़िया लये चाहि' तार पाने
वज्रसेन बलि' उठे—"आमार ए प्राणे
तोमार की काज छिल। ए जन्मेर लागि'
तोर पाप-मूल्ये केना महापापभागी
ए जीवन करिलि धिक्कृत। कलङ्किनी
धिक् ए निश्वास मोर तोर काछे ऋणी।
धिक् ए निमेषपात प्रत्येक निमेषे।"
एत बलि' उठिल सबले। निरुद्देशे
नौका छाड़ि' चलि गेला तीरे—अन्धकारे
वनमाझे। शुष्कपत्रराशि पदभारे
शब्द करि' अरण्येरे करिल चकित
प्रतिक्षणे, घन गुल्मगन्ध पुञ्जीकृत
वायुशून्य वनतले; तरुकाण्डगुलि
चारिदिके आँका बाँका नाना शाखा तुलि'
अन्धकारे धरियाछे असंख्य आकार
विकृत विरूप; रुद्ध होलो चारिधारे

निस्तब्ध निषेधसम प्रसारिल कर
लताश्रृङ्खलित वन। श्रान्तकलेवर
पथिक बसिल भूमे। के तार पश्चाते
दाँड़ाइल उपच्छायासम। साथे साथे
अन्धकारे पदे पदे ता'रे अनुसरि'
आसियाछे दीर्घ पथ मौनी अनुचरी
रक्तसिक्तपदे। दुइ मुष्टि बद्ध क'रे
गर्जिल पथिक—"तबु छाड़िबि ना मोरे?
रमणी विद्युत्वेगे छुटिया पड़िया
वन्यार तरङ्गसम दिल आबरिया
आलिङ्गने केशपाशे स्रस्त वेशवासे
आघ्राणे चुम्बने स्पर्शे सघन निश्वासे
सर्व अङ्ग ता'र; आर्द्र गद्गद-वचना
कण्ठ रुद्धप्राय; "छाड़िब ना, छाड़िब ना,"
कहे बारंबार, "तोमा लागि पाप, नाथ,
तुमि शास्ति दाओ मोरे, करो मर्म-घात,
शेष क'रे दाओ मोर दण्ड पुरस्कार।"
अरण्येर ग्रहताराहीन अन्धकार
अन्धभावे की येन करिल अनुभव
बिभीषिका। लक्ष लक्ष तरुमूल सब
माटिर भितरे थाकि' शिहरिल त्रासे।
बारेक ध्वनिल रुद्ध निष्पेषित श्वासे

अन्तिम काकुति स्वर,—तारि परक्षणे
के पड़िल भूमि 'परे असाड़ पतने ।

वज्रसेन वन हते फिरिल यखन,
प्रथम उषार करे विद्युत्-वरन
मन्दिर-त्रिशूल-चूड़ा जाह्नवीर पारे ।
जनहीन बालुतटे नदी धारे धारे
काटाइल दीर्घ दिन क्षिप्तेर मतन
उदासीन । मध्याह्नेर ज्वलन्त तपन
हानिल सर्वाङ्गे तार अग्निमयी कशा ।
घटकक्षे ग्रामवधू हेरि' तार दशा
कहिल करुण कण्ठे—"के गो गृहछाड़ा
एसो आमादेर घरे ।" दिल ना से साड़ा,
तृषाय फाटिल छाति,—तबु स्पर्शिल ना
सम्मुखेर नदी हते जल एक कणा
दिनशेषे ज्वरतप्त दग्ध कलेवरे
छुटिया पशिल गिया तरणीर 'परे
पतङ्ग येमन वेगे अग्नि देखे धाय
उग्र आग्रहेर भरे । हेरिल शय्याय
एकटि नूपुर आछे पड़े । शतबार
राखिल वक्षेते चापि' । झंकार ताहार

शतमुख शरसम लागिल वर्षिते
हृदयेर माझे। छिल पड़ि' एकभिते
नीलाम्बर वस्त्रखानि,—राशीकृत करि'—
तारि 'परे मुख राखि' रहिल से पड़ि—
सुकुमार देहगन्ध निश्वासे निःशेषे
लइल शोषण करि' अतृप्त आवेशे।
शुक्ल पञ्चमीर शशी अस्ताचलगामी
सप्तपर्ण तरुशिरे पड़ियाछे नामि'
शाखा अन्तराले। दुइ बाहु प्रसारिया
डाकितेछे वज्रसेन "एसो एसो प्रिया"—
चाहि अरण्येर पाने। हेनकाले तीरे
वालुतटे घनकृष्ण वनेर तिमिरे
कार मूर्ति देखा दिल उपच्छायासम।
"एसो एसो प्रिया।" "आसियाछि प्रियतम।"
चरणे पड़िल श्यामा—"क्षमो मोरे क्षमो।
गेल ना तो सुकठिन ए परान मम
तोमार करुण करे!" शुधु क्षणतरे
वज्रसेन ताकाइल तार मुख 'परे,—
क्षणतरे आलिङ्गन लागि' बाहु मेलि'
चमकि' उठिल, तारे दूरे दिल ठेलि
गरजिल—"केन एलि, केन फिरे एलि।"
वक्ष हते नूपुर लइया—दिल फेलि',

ज्वलन्त अङ्गार सम नोलाम्बरखानि
चरणेर काछ हते फेले दिल टानि ;
शय्या येन अग्निशय्या, पदतले थाकि
लागिल दहिते तारे ; मुदि दुइ आँखि
कहिल फिराये मुख—"याओ याओ फिरे
मोरे छेड़े चले याओ।" नारी नतशिरे
क्षणतरे रहिल नीरवे। परक्षणे
भूतले राखिया जानु युवार चरणे
प्रणमिल, तार परे नामि' नदीतीरे
आँधार बनेर पथे चलि गेल धीरे,
निद्राभङ्गे क्षणिकेर अपूर्व स्वपन
निशार तिमिर माझे मिलाय येमन।

२३ आश्विन, १३०६ (सं० १९५६)

सामान्य क्षति

(दिव्यावदानमाला)

बहे माघमासे शीतेर बातास
स्वच्छसलिला वरुणा।
पुरी हते दूरे ग्रामे निर्जने
शिलामय घाट चम्पकवने,

স্নানে চলেছেন শত সখীসনে
কাশীর মহিষী করুণা।

সে-পথ সে-ঘাট আজি এ প্রভাতে
জনহীন রাজশাসনে।
নিকটে যে ক'টি আছিল কুটীর
ছেড়ে গেছে লোক তাই নদীতীর
স্তব্ধ গভীর, কেবল পাখীর
কূজন উঠিছে কাননে।

আজি উতরোল উত্তর বায়ে
উতলা হয়েছে তটিনী।
সোনার আলোক পড়িয়াছে জলে,
পুলকে উছলি ঢেউ ছলছলে,
লক্ষ মানিক ঝলকি আঁচলে
নেচে চলে যেন নটিনী।

কলকল্লোলে লাজ দিল আজ
নারীকণ্ঠের কাকলী ;
মৃণাল-ভুজের ললিত বিলাসে,
চঞ্চলা নদী মাতে উল্লাসে,
আলাপে প্রলাপে হাসি-উচ্ছ্বাসে,
আকাশ উঠিল আকুলি।

স্নান সমাপন করিয়া যখন
কূলে উঠে নারী সকলে—
মহিষী কহিলা, "উহু শীতে মরি,
সকল শরীর উঠিছে শিহরি',
জ্বেলে দে আগুন ওলো সহচরী,
শীত নিবারিব অনলে।"

সখিগণ সবে কুড়াইতে কুটা
চলিল কুসুম-কাননে।
কৌতুকরসে পাগলপরানী
শাখা ধরি' সবে করে টানাটানি,
সহসা সবারে ডাক দিয়া রানী
কহে সহাস্য আননে :—

"ওলো তোরা আয়। ওই দেখা যায়
কুটীর কাহার অদূরে।
ওই ঘরে তোরা লাগাবি অনল,
তপ্ত করিব কর পদতল,"
এত বলি রানী রঙ্গে বিভল
হাসিয়া উঠিল মধুরে॥
কহিল মালতী সকরুণ অতি,—
"এ কী পরিহাস রানী মা।

आगुन ज्वालाये केन दिबे नाशि ।
ए कुटीर कोन् साधु सन्न्यासी
कोन् दीनजन, कोन् परवासी
बाँधियाछे नाहि जानि मा ॥"

रानी कहे रोषे,—"दूर करि दाओ
एइ दीन दयामयीरे ।"—
अति दुर्दाम कौतुक-रत
यौवनमदे निष्ठुर यत
युवतीरा मिलि' पागलेर मतो
आगुन लागाल कुटीरे ॥

घन घोर धूम घुरिया घुरिया
फुलिया फुलिया उड़िल ।
देखिते देखिते हुहु हुंकारि,
झलके झलके उल्का उगारि
शत शत लोल जिह्वा प्रसारि
वह्नि आकाश जुड़िल ॥

पाताल फुँड़िया उठिल येन रे
ज्वालामयी यत नागिनी,

फणा नाचाइया अम्बरपाने,
मातिया उठिल गर्जनगाने ;
प्रलयमत्त रमणीर काने
बाजिल दीपक रागिणी ॥

प्रभात-पाखिर आनन्दगान
भयेर विलापे टुटिल ;—
दले दले काक करे कोलाहल,
उत्तर-वायु हइल प्रबल,—
कुटीर हइते कुटीरे अनल
उड़िया उड़िया छुटिल ॥

छोटो ग्रामखानि लेहिया लइल
प्रलय-लोलुप रसना ।
जनहीन पथे माघेर प्रभाते
प्रमोदक्लान्त शत सखी साथे
फिरे गेल रानी कुवलय हाते
दीप्त अरुण-वसना ।

तखन सभाय विचार आसने
बसियाछिलेन भूपति ।

गृहहीन प्रजा दले दले आसे,
द्विधाकम्पित गद्‌गद् भाषे
निवेदिल दुख संकोचे त्रासे
चरणे करिया मिनति ॥

सभासन छाड़ि उठि गेल राजा
रक्तिम मुख शरमे ।
अकाले पशिला रानीर आगार,—
कहिला,—"महिषी, ए की व्यवहार ।
गृह ज्वालाइले अभागा प्रजार
बलो कोन् राजधरमे ।"

रुषिया कहिल राजार महिषी—
"गृह कह तारे की बोधे ।
गेछे गुटिकत जीर्ण कुटीर,
कतटुकु क्षति हयेछे प्राणीर ।
कत धन याय राजमहिषीर
एक प्रहरेर प्रमोदे ॥"

कहिलेन राजा उद्यत-रोष
रुधिया दीप्त हृदये,—

"यतदिन तुमि आछ राजरानी
दीनेर कुटीरे दीनेर की हानि
बुझिते नारिबे जानि ताहा जानि ;—
बुझाव तोमारे निदये ।"

राजार आदेशे किङ्करी आसि
भूषण फेलिल खुलिया ;
अरुण बरन अम्बरखानि
निर्मम करे खुले दिल टानि',
भिखारी नारीर चीरवास आनि'
दिल रानी-देहे तुलिया ॥
पथे लये ता'रे कहिलेन राजा,—
"मागिबे दुयारे दुयारे ;
एक प्रहरेर लीलाय तोमार
ये क'टि कुटीर होलो छारखार
यतदिने पारो से क'टि आबार
गड़ि' दिते हबे तोमारे ।
वत्सर काल दिलेम समय
तार परे फिरे आसिया,

सभाय दाँड़ाये करिया प्रणति
सबार समुखे जानाबे युवती
हयेछे जगते कतटुकु क्षति
जीर्ण कुटीर नाशिया ॥"

२५ आश्विन, १३०६ (सं० १६५६)

मूल्य-प्राप्ति

(अवदानशतक)

अघ्राने शीतेर राते निष्ठुर शिशिरघाते
पद्मगुलि गियाछे मरिया ;
सुदास मालीर घरे काननेर सरोवरे
एकटि फुटेछे की करिया ।
तुलि' लये, बेचिबारे गेल से प्रासाद-द्वारे
मागिल राजार दरशन,—
हेन काले हेरि फुल आनन्दे पुलकाकुल
पथिक कहिल एकजन :—
"अकालेर पद्म तव आमि एटि किनि लब,
कत मूल्य लइबे इहार ।
बुद्ध भगवान् आज एसेछेन पुरमाझ
ताँर पाये दिब उपहार ।"

माली कहे, "एक माषा स्वर्ण पाब मने आशा"—
पथिक चाहिल ताहा दिते,—
हेनकाले समारोहे बहु पूजा अर्घ्य ब'हे
नृपति बाहिरे आचम्बिते।
राजेन्द्र प्रसेनजित् उच्चारि मङ्गल गीत
चलेछेन बुद्ध दरशने—
हेरि' अकालेर फुल— शुधालेन "कत मूल।
किनि दिब प्रभुर चरणे।"
माली कहे "हे राजन् स्वर्ण माषा दिये पण
किनेछेन एइ महाशय।"
"दश माषा दिब आमि"— कहिला धरणी-स्वामी
"बिश माषा दिब"—पान्थ कय।
दोँहे कहे "देह देह" हार नाहि माने केह,
मूल्य बेड़े ओठे क्रमागत।
माली भावे याँर तरे ए दोँहे विवाद करे
ताँरे दिले आरो पाब कत।
कहिल से करजोड़े, "दया क'रे क्षमो मोरे—
ए फुल बेचिते नाहि मन।"
एत बलि' छुटिल से येथा रयेछेन वसे
बुद्धदेव उजलि' कानन।
बसेछेन पद्मासने प्रसन्न प्रशान्त मने,
निरञ्जन आनन्द मुरति।

दृष्टि हते शान्ति झरे, स्फुरिछे अधर 'परे

करुणार सुधाहास्य-ज्योति।

सुदास रहिल चाहि, नयने निमेष नाहि,

मुखे तार वाक्य नाहि सरे।

सहसा भूतले पड़ि, पद्मटि राखिल धरि'

प्रभुर चरणपद्म 'परे।

बरषि अमृतराशि बुद्ध शुधालेन हासि'

"कह वत्स, की तव प्रार्थना।"

व्याकुल सुदास कहे "प्रभु आर किछु नहे,

चरणेर धूलि एक कणा।"

२६ आश्विन, १३०६ (सं० १९५६)

नगरलक्ष्मी

(कल्पद्रुमावदान)

दुर्भिक्ष श्रावस्तिपुरे यबे

जागिया उठिल हाहारवे,—

बुद्ध निज भक्तगणे शुधालेन जने जने

"क्षुधितेरे अन्नदान-सेवा

तोमरा लइबे बलो के-वा।"

शुनि' ताहा रत्नाकर शेठ
करिया रहिल माथा हेँट।
कहिल से कर जुड़ि'— क्षुधार्त विशालपुरी,
एर क्षुधा मिटाइब आमि—
एमन क्षमता नाइ, स्वामी।"

कहिल सामन्त जयसेन—
"ये-आदेश प्रभु करिछेन
ताहा लइताम शिरे यदि मोर बुक चिरे'
रक्त दिले होत कोनो काज,
मोर घरे अन्न कोथा आज।"
निश्वासिया कहे धर्मपाल—
"की कव, एमन दग्ध भाल,—
आमार सोनार क्षेत शुषिछे अजन्मा-प्रेत,
राजकर जोगानो कठिन,
हयेछि अक्षम दीनहीन।"

रहे सबे मुखे मुखे चाहि',
काहारो उत्तर किछु नाहि।
निर्वाक से-सभाघरे व्यथित नगरी 'परे
बुद्धेर करुण आँखि दुटि
सन्ध्यातारासम रहे फुटि'।

तखन उठिल धीरे धीरे
रक्तभाल लाजनम्रशिरे
अनाथपिण्डद-सुता वेदनाय अश्रुप्लुता,
बुद्धेर चरणरेणु ल'ये
मुक्तकण्ठे कहिल विनये :—

"भिक्षुनीर अधम सुप्रिया
तव आज्ञा लइल बहिया।
काँदे यारा खाद्यहारा आमार सन्तान तारा,
नगरीर अन्न विलाबार
आमि आजि लइलाम भार।"

विस्मय मानिल सबे शुनि' :—
"भिक्षुकन्या तुमि ये भिक्षुनी,—
कोन् अहंकारे माति लइले मस्तक पाति'
ए हेन कठिन गुरु काज।
की आछे तोमार कह आज।"

कहिल से नमि' सबा काछे—
"शुधु एइ भिक्षापात्र आछे।

आमि दीनहीन मेये अक्षम सबार चेये,
ताइ तोमादेर पाव दया
प्रभु-आज्ञा हइबे विजया।

आमार भाण्डार आछे भ'रे
तोमा सबाकार घरे घरे।
तोमरा चाहिले सबे ए पात्र अक्षय हबे
भिक्षा-अन्ने बाँचाव वसुधा—
मिटाइब दुर्भिक्षेर क्षुधा।"

२७ आश्विन, १३०६ (सं० १६५६)

अपमान-वर

(भक्तमाल)

भक्त कबीर सिद्धपुरुष ख्याति रटियाछे देशे।
कुटीर ताहार घेरिया दाँड़ाल लाखो नरनारी एसे।
केह कहे "मोर रोग दूर क'रे मन्त्र पड़िया देह,"
सन्तान लागि करे काँदाकाटि वन्ध्या रमणी केह।
केह बले, "तव दैव क्षमता चक्षे देखाओ मोरे"
केह कय, "भवे आछेन विधाता बुझाओ प्रमाण क'रे।"

काँदिया ठाकुरे कातर कबीर कहे दुइ जोड़करे—
"दया क'रे हरि जन्म दियेछ नीच यवनेर घरे,—
भेवेछिनु केह आसिबे ना काछे अपार कृपाय तव,
सबार चोखेर आड़ाले केवल तोमाय आमाय रबो।
ए की कौशल खेलेछ मायावी, बुझि दिले मोरे फाँकि।
विश्वे'र लोक घरे डेके एने तुमि पलाइबे ना कि।"

ब्राह्मण यत नगरे आछिल उठिल विषम रागि',
लोक नाहि धरे यवन जोलार चरणधूलार लागि'।
चारि पोओया कलि पुरिया आसिल पापेर बोझाय भरा,
एर प्रतिकार ना करिले आर रक्षा ना पाय धरा।
ब्राह्मणदल युक्ति करिल नष्ट नारीर साथे,
गोपने ताहारे मन्त्रणा दिल, काञ्चन दिल हाते।
वसन बेचिते एसेछे कबीर एकदा हाटेर वारे,
सहसा कामिनी सबार सामने काँदिया धरिल ता'रे।
कहिल, "रे शठ निठुर कपट, कहिने काहारो काछे
एमनि क'रे कि सरला नारीरे छलना करिते आछे।
विना अपराधे आमारे त्यजिया साधु साजियाछ भालो,
अन्नवसन बिहने आमार बरन हयेछे कालो।"
काछे छिल यत ब्राह्मणदल करिल कपट कोप,
"भण्ड-तापस, धर्मेर नामे करिछ धर्मलोप।

तुमि सुखे ब'से धुला छड़ाइछ सरल लोकेर चोखे,
अबला अखला पथे पथे आहा फिरिछे अन्नशोके।"
कहिल कबीर "अपराधी आमि, घरे एसो नारी तबे,
आमार अन्न रहिते केन वा तुमि उपवासी र'बे।"

दुष्टा नारीरे आनि गृह-माझे विनय आदर करि'
कबीर कहिल—"दीनेर भवने तोमारे पाठाल हरि।"
काँदिया तखन कहिल रमणी लाजे भये परितापे,—
"लोभे प'ड़े आमि करियाछि पाप, मरिब साधुर शापे।"
कहिल कबीर, "भय नाइ मातः, लइब ना अपराध;
एनेछ आमार माथार भूषण अपमान अपवाद।"
घुचाइल तार मनेर विकार, करिल चेतना दान,
सँपि' दिल तार मधुर कण्ठे हरिनाम गुणगान।
रटि' गेल देशे—कपट कबीर, साधुता नाहार मिछे।
शुनिया कबीर कहे नतशिर, "आमि सकलेर निचे।
यदि कूल पाइ तरणी गरब राखिते ना चाहि किछु;
तुमि यदि थाको आमार उपरे, आमि र'बो सब-निचु।"

राजार चित्ते कौतुक होलो शुनिते साधुर गाथा,
दूत आसि' ताँरे डाकिल यखन, साधु नाड़िलेन माथा।

कहिलेन, "थाकि सब हते दूरे आपन हीनता माझे ;
आमार मतन अभाजन-जन राजार सभाय साजे।"
दूत कहे, "तुमि ना गेले घटिबे आमादेर परमाद,
यश शुने तव हयेछे राजार साधु देखिबार साध।"
राजा बसे छिल सभार माझारे पारिषद् सारि सारि,
कबीर आसिया पशिल सेथाय पश्चाते ल'ये नारी।
केह हासे केह करे भुरुकुटि, केह रहे नतशिरे,
राजा भावे—एटा केमन निलाज, रमणी लइया फिरे।
इङ्गिते ताँर, साधुरे सभार बाहिर करिल द्वारी ;
विनये कबीर चलिल कुटीरे सङ्गे लइया नारी।
पथ माझे छिल ब्राह्मणदल, कौतुकभरे हासे ;
शुनाये शुनाये विद्रूपवाणी कहिल कठिन भाषे।
तखन रमणी काँदिया पड़िल साधुर चरणमूले—
कहिल,—"पापेर पङ्क हइते केन निले मोरे तुले'।
केन अधमारे राखिया दुयारे सहितेछ अपमान।"
कहिल कबीर—"जननी, तुमि ये, आमार प्रभुर दान।"
२८ आश्विन, १३०६ (सं० १९५६)

स्वामीलाभ

(भक्तमाल)

एकदा तुलसीदास जाह्नवीर तीरे
निर्जन श्मशाने
सन्ध्याय आपन मने एका एका फिरे
माति' निज गाने ।
हेरिलेन, मृत पति-चरणेर तले
बसियाछे सती ;
तारि सने एक साथे एक चितानले
मरिबारे मति ।
सङ्गिगण माझे माझे आनन्द-चीत्कारे
करे जयनाद,
पुरोहित ब्राह्मणेरा घेरि' चारिधारे
गाहे साधुवाद ॥
सहसा साधुरे नारी हेरिया सम्मुखे
करिया प्रणति
कहिल विनये "प्रभो, आपन श्रीमुखे
देह अनुमति ।"

तुलसी कहिल, "मातः याबे कोन्खाने,
एत आयोजन ?"
सती कहे—"पतिसह याब स्वर्ग पाने
करियाछि मन ।"
"धरा छाड़ि' केन नारी, स्वर्ग चाह तुमि",
साधु हासि' कहे,
"हे जननी, स्वर्ग याँर ए धरणीभूमि
ताँहार कि नहे ।"
बुझिते ना पारि' कथा नारी रहे चाहि'
विस्मये अवाक्—
कहे करजोड़ करि'—"स्वामी यदि पाइ
स्वर्ग दूरे थाक् ।"
तुलसी कहिल हासि'—फिरे चलो घरे
कहितेछि आमि,
फिरे पाबे आज हते मासेकेर परे
आपनार स्वामी ।
रमणी आशार वशे गृहे फिरे याय
श्मशान तेयागि' ;
तुलसी जाह्नवी-तीरे निस्तब्ध निशाय
रहिलेन जागि' ।
नारी रहे शुद्धचिते निर्जन भवने ;
तुलसी प्रत्यह

की ताहारे मन्त्र देय, नारी एकमने
ध्याय अहरह ।
एकमास पूर्ण होते प्रतिवेशीदले
आसि' तार द्वारे
शुधाइल, "पेले स्वामी ?"—नारी हासि बले—
"पेयेछि ताँहारे ।"
शुनि' व्यग्र कहे तारा—"कह तबे कह
आछे कोन् घरे ।"
नारी कहे—"रयेछेन प्रभु अहरह
आमारि अन्तरे ।"

२६ आश्विन, १३०६ (सं १९५६)

स्पर्शमणि

(भक्तमाल)

नदीतीरे वृन्दावने सनातन एक मने
जपिछेन नाम
हेनकाले दीनवेशे ब्राह्मण चरणे एसे
करिल प्रणाम ।
शुधालेन सनातन, "कोथा हते आगमन
की नाम ठाकुर ।"

विप्र कहे; की वा कब, पेयेछि दर्शन तव
भ्रमि' बहुदूर ;
जीवन आमार नाम, मानकरे मोर धाम।
जिला वर्धमाने,
एत बड़ो भाग्यहत दीनहीन मोर मतो
नाइ कोनखाने।
जमिजमा आछे किछु, क'रे आछि माथा निचु
अल्प स्वल्प पाइ।
क्रियाकर्म यज्ञ यागे बहु ख्याति छिल आगे
आज किछु नाइ।
आपन उन्नति लागि' शिव काछे वर मागि
करि आराधना।—
एकदिन निशि-भोरे स्वप्ने देव कन मोरे—
"पूरिबे प्रार्थना ;
याओ यमुनार तीर, सनातन गोस्वामीर
धरो दुटि पाय,
ताँरे पिता बलि मेनो, ताँरि हाते आछे जेनो
धनेर उपाय।"
शुनि कथा सनातन भाबिया आकुल हन—
"की आछे आमार।
याहा छिल से सकलि फेलिया एसेछि चलि,'—
भिक्षामात्र सार।"

सहसा विस्मृति छुटे,—साधु फुकारिया उठे—
"ठिक बटे ठिक।
एकदिन नदी-तटे कुड़ाये पेयेछि बटे
परश-माणिक।
यदि कभु लागे दाने सेइ भेबे ओइखाने
पुँतेछि बालुते ;
निये याओ हे ठाकुर, दुःख दव हबे दूर
छुँते नाहि छुँते।"
विप्र ताड़ाताड़ि आसि' खुँड़िया बालुकाराशि
पाइल से-मणि,
लोहार मादुलि दुटि सोना हये ओठे फुटि'
छुँइल येमनि।
ब्राह्मण बालुर' परे विस्मये बसिया पड़े—
भाबे निजे निजे।
यमुना कल्लोल गाने चिन्तितेर काने काने
कहे कत की-ये।
नदीपारे रक्तछवि दिनान्तेर क्रान्त रवि
गेल अस्ताचले,—
तखन ब्राह्मण उठे, साधुर चरणे लुटे'
कहे अश्रुजले,—

"ये धने हइया धनी मणिरे मानो ना मणि
ताहारि खानिक
मागि आमि नतशिरे।"—एत बलि गद्दो-नीरे
फेलिल मानिक।

२६ आश्विन, १३०६ (सं० १६५६)

वन्दी वीर

पञ्च-नदीर तीरे
वेणी पाकाइया शिरे
देखिते देखिते गुरुर मन्त्रे
जागिया उठेछे शिख—
निर्मम निर्भीक।
हाजार कण्ठे गुरुजीर जय
ध्वनिया तुलेछे दिक्।
नूतन जागिया शिख
नूतन ऊषार सूर्यर पाने
चाहिल निर्निमिख॥
"अलख निरञ्जन"—
महारव उठे वन्धन टुटे
करे भय-भञ्जन।

বক্ষের পাশে ঘন উল্লাসে
অসি বাজে ঝঞ্ঝন।
পঞ্জাব আজি গরজি' উঠিল—
"অলখ নিরঞ্জন॥"
এসেছে সে-একদিন
লক্ষ পরানে শঙ্কা না জানে
না রাখে কাহারো ঋণ।
জীবন মৃত্যু পায়ের ভৃত্য,
চিত্ত ভাবনাহীন।
পঞ্চ নদীর ঘিরি' দশ তীর
এসেছে সে একদিন॥

দিল্লি-প্রাসাদ কূটে
হোথা বারবার বাদশাজাদার
তন্দ্রা যেতেছে ছুটে'।
কাদের কণ্ঠে গগন মন্থে,
নিবিড় নিশীথ টুটে,
কাদের মশালে আকাশের ভালে
আগুন উঠেছে ফুটে।
পঞ্চ নদীর তীরে
ভক্ত-দেহের রক্তলহরী
মুক্ত হইল কি রে।

लक्ष वक्ष चिरे
झाँके झाँके प्राण पक्षी-समान
छुटे येन निज नीड़े ।
वीरगण जननीरे
रक्त-तिलक ललाटे पराल
पञ्च नदीर तीरे ॥

मोगल-शिखेर रणे
मरण आलिङ्गने
कण्ठ पाकड़ि' धरिल आँकड़ि'
दुइ जना दुइ जने ।
दंशन-क्षत श्येन विहङ्ग
युझे भुजङ्ग सने ।
से-दिन कठिन रणे
"जय गुरुजीर" हाँके शिख-वीर
सुगभीर निःस्वने ।
मत्त मोगल रक्तपागल
"दीन दीन" गरजने ॥

गुरुदासपुर गड़े
बन्दा यखन बन्दी हइल
तुरानी सेनार करे,

सिंहेर मतो शृङ्खलगत
बाँधि' लये गेल ध'रे
दिल्लि नगर 'परे ;
बन्दा समरे वन्दो हइल
गुरुदासपुर गड़े ॥

सम्मुखे चले मोगल-सैन्य
उड़ाये पथेर धूलि,
छिन्न शिखेर मुण्ड लइया
बर्शाफलके तुलि' ।
शिख सात शत चले पश्चाते,
बाजे शृङ्खलगुलि ।
राजपथ 'परे लोक नाहि धरे,
वातायन याय खुलि' ।
शिख गरजय "गुरुजीर जय"
परानेर भय भुलि' ।
मोगले ओ शिखे उड़ाल आजिके
दिल्लि पथेर धूलि ॥

पड़ि' गेल काड़ाकाड़ि,
आगे केबा प्राण करिबेक दान
तारि लागि ताड़ाताड़ि ।

दिन गेले प्राते घातकेर हाते
बन्दीरा सारि सारि
"जय गुरुजीर" कहि' शत वीर
शत शिर देय डारि' ॥

सप्ताहकाले सात शत प्राण
निःशेष हये गेले
बन्दार कोले काजि दिल तुलि'
बन्दार एक छेले ;
कहिल,—"इहारे वधिते हइबे
निज हाते अवहेले।"
दिल तार कोले फेले—
किशोर कुमार, बाँधा वाहु ता'र,
बन्दार एक छेले ॥

किछु ना कहिल वाणी,
बन्दा सुधीरे छोटो छेलेटिरे
लइल वक्षे टानि'।
क्षणकालतरे माथार उपरे
राखे दक्षिणपाणि,
शुधु एकबार चुम्बिल तार
राङा उष्णीषखानि।

तार परे धीरे कटिवास हते
छुरिका खसाये आनि'—
बालकेर मुख चाहि'
"गुरुजीर जय" काने काने कय—
"रे पुत्र भय नाहि।"
नवीन वदने अभय किरण
ज्वलि' उठे उत्साहि'—
किशोर कण्ठे काँपे सभातल
बालक उठिल गाहि'—
"गुरुजीर जय, किछु नाहि भय—"
बन्दार मुख चाहि'॥

बन्दा तखन वामबाहुपाश
जड़ाइया ता'र गले,—
दक्षिण करे छेलेर वक्षे
छुरि बसाइल बले,—
"गुरुजीर जय" कहिया बालक
लुटाल धरणीतले॥

सभा होलो निस्तब्ध।
बन्दार देह छिड़िल घातक
साँड़ाशि करिया दग्ध।

स्थिर हये वीर मरिल, ना करि'
एकटि कातर शब्द ।
दर्शकजन मुदिल नयन,
सभा होलो निस्तब्ध ।

३० कार्तिक, १३०६ (सं० १९५६)

मानी

आरङ्जेब भारत यबे
करितेछिल खान् खान्—
मारवपति कहिला आसि'
"करह प्रभु अवधान,—
गोपन राते अचलगड़े
नहर याँरे एनेछे ध'रे
वन्दी तिनि आमार घरे
सिरोहिपति सुरतान,
की अभिलाष ताँहार 'परे
आदेश मोरे करो दान ॥"

शुनिया कहे आरङ्जेब
"की कथा शुनि अद्‌भुत।
एतदिने कि पड़िल धरा
अशनिभरा विद्युत्।
पाहाड़ी लये कयेक शत
पाहाड़े वने फिरिते रत,
मरुभूमिर मरीचिमतो
स्वाधीन छिल राजपुत,
देखिते चाहि,—आनिते ता'रे
पाठाओ कोनो राजदूत॥"
माड़ोया-राज यशोवन्त
कहिला तबे जोड़कर—
"क्षत्रकुल-सिंहशिशु
लयेछे आजि मोर घर,—
बादशा ताँरे देखिते चान—
वचन आगे करुन दान
किछुते कोनो असम्मान
हबे ना कभु ताँर 'पर—
सभाय तबे आपनि ताँरे
आनिब करि' समादर॥"
आरङ्जेब कहिला हासि'
"केमन कथा कह आज।

प्रवीण तुमि प्रबल वीर
माड़ोयापति महाराज ?
तोमार मुखे एमन वाणी,
शुनिया मने शरम मानि,
मानीर मान करिब हानि
मानीरे शोभे हेन काज ?
कहिनु आमि, चिन्ता नाहि,
आनह तारे सभामाझ ॥"
सिरोहिपति सभाय आसे
माड़ोयाराजे लये साथ ;
उच्चशिर उच्चे राखि'
समुखे करि आँखि पात ।
कहिल सबे वज्रनादे,
"सेलाम करो बादशाजादे,"—
हेलिया यशोवन्त-काँधे
कहिला धीरे नरनाथ,—
"गुरुजनेर चरण छाड़ा
करिने कारे प्रणिपात ॥"
कहिला रोषे रक्त-आँखि
बादशाहेर अनुचर—
"शिखाते पारि केमने माथा
लुटिया पड़े भूमि 'पर ।"

हासिया कहे सिरोहिपति,
"एमन येन ना हय मति
भयेते कारे करिब नति—
जानिने कभु भय डर।"
एतेक बलि' दाँड़ाल राजा
कृपाण-'परे करि' भर।
बादशा धरि' सुरतानेरे
बसाये निल निजपाश।
कहिला "वीर, भारत माझे
की देश-'परे तव आश।"
कहिला राजा, "अचलगड़
देशेर सेरा जगत्-'पर,"
सभार माझे परस्पर
नीरवे उठे परिहास।
बादशा कहे, "अचल हये
अचलगड़े करो वास॥"

१ला कार्तिक, १३०६ (सं० १९५६)

प्रार्थनातीत दान*

पाठानेरा यबे बाँधिया आनिल
वन्दी शिखेर दल—
सुहिद्‌गञ्जे रक्त-बरन
हइल धरणीतल।
नवाब कहिल—"शुन तरुसिं
तोमारे क्षमिते चाइ।"
तरुसिं कहे—"मोरे केन तव
एत अवहेला भाइ।"
नवाब कहिल—"महावीर तुमि,
तोमारे ना करि क्रोध,
वेणीटि काटिया दिये याओ मोरे
एइ शुधु अनुरोध।"
तरुसिं कहे—"करुणा तोमार
हृदये रहिल गाँथा—
या चेयेछ तार किछु बेशि दिब,
वेणीर सङ्गे माथा।"

२रा कार्तिक, १३०६ (सं० १९५६)

---

* शिखेर पक्षे वेणीच्छेदन धर्म-परित्यागेर न्याय दूषणीय।

राजविचार

(राजस्थान)

विप्र कहे—"रमणी मोर
आछिल येइ घरे,
निशीथे सेथा पशिल चोर
धर्मनाश तरे।
बेँधेछि तारे, एखन कह
चोरे की दिब साजा।
"मृत्यु"—शुधु कहिला तारे
रतनराओ राजा।

छुटिया आसि कहिल दूत—
"चोर से युवराज ;
विप्र ताँरे धरेछे राते,
काटिल प्राते आज।
ब्राह्मणेरे एनेछि धरे,
की तारे दिब साजा।"
"मुक्ति दाओ"—कहिल शुधु
रतनराओ राजा।

४ कार्तिक १३०६ (सं० १९५६)

गुरु-गोविन्द्

"वन्धु, तोमरा फिरे याओ घरे
एखनो समय नय,"—
निशि अवसान, यमुनार तीर,
छोटो गिरिमाला, वन सुगभीर ;
गुरु-गोविन्द् कहिल डाकिया
अनुचर गुटि छय।

याओ रामदास, यओगो लेहारि,
साहु फिरे याओ तुमि।
देखाओ ना लोभ डाकिओ ना मोरे
झाँपाये पड़िते कर्म-सागरे,
एखनो पड़िया थाक् बहुदूरे
जीवन रङ्गभूमि॥

मानवेर प्राण डाके येन मोरे
सेइ लोकालय हते
सुप्त निशीथे जेगे उठे' ताइ
चमकिया उठे' बलि 'याइ, याइ,'

प्राण मन देह फेले दिते चाइ
प्रबल मानव स्रोते ॥

तोमादेर हेरि चित चञ्चल,
उद्दाम धाय मन ।
रक्त-अनल शत शिखा मेलि
सर्प-समान करि उठे केलि,
गञ्जना देय तरवारि येन
कोषमाझे झन्झन् ॥

हाय, से की सुख, ए गहन त्यजि
हाते लये जयतूरी
जनतार माझे छुटिया पड़िते,
राज्य ओ राजा भाङिते गड़िते,
अत्याचारेर वक्षे पड़िया
हानिते तीक्ष्ण छुरि ॥

तुरङ्गसम अन्ध नियति
बन्धन करि ताय
रश्मि पाकड़ि आपनार करे
विघ्न विपद लङ्घन क'रे

आपनार पथे छुटाइ ताहारे
प्रतिकूल घटनाय ॥

समुखे ये आसे, सरे याय केह
पड़े याय केह भूमे ;
द्विधा हये बाधा हतेछे भिन्न,
पिछे पड़े थाके चरणचिह्न,
आकाशेर आँखि करिछे खिन्न
प्रलय-वह्निधूमे ॥

कभु अमानिशा नीरव निविड़ ;
कभु वा प्रखर दिन ।
कभु वा आकाशे चारिदिकमय
वज्र लुकाये मेघ जड़ो हय,
कभु वा झटिका माथार उपरे
भेङे पड़े दयाहीन ॥

आय, आय, आय,—डाकितेछि सबे
आसितेछे सबे छुटे ।
वेगे खुले याय सब गृहद्वार,
भेङे बाहिराय सब परिवार,

सुख सम्पद माया ममतार
बन्धन याय टुटे ॥

सिन्धु माझारे मिशिछे येमन
पञ्च नदीर जल,—
आह्वान शुने के कारे थामाय,
भक्त-हृदय मिलिछे आमाय,
पाञ्जाब जुड़ि उठिछे जागिया
उन्माद कोलाहल ॥

कोथा याबि, भीरु, गहने गोपने
पशिछे कण्ठ मोर ;
प्रभाते शुनिया आय, आय, आय,
काजेर लोकेरा काज भुले याय,
निशीथे शुनिया, आय तोरा आय,
भेङे याय घुमघोर ॥

यत आगे चलि, बेड़े याय लोक
भरे याय घाटबाट ।
भुले याय सब जाति-अभिमान,
अवहेले देय आपनार प्राण,

एक हये याय मान अपमान
ब्राह्मण आर् जाठ ॥

थाक् भाइ, थाक्, केन ए स्वपन,
एखनो समय नय
एखनो एकाकी दीर्घ रजनी
जागिते हइबे पल गनि गनि
अनिमिष चोखे पूर्व गगने
देखिते अरुणोदय ॥

एखनो विहार कल्प जगते,
अरण्य राजधानी
एखनो केवल नीरव भावना,
कर्मविहीन विजन साधना,
दिवानिशि शुधु बसे बसे शोना
आपन मर्मवाणी ॥

एका फिरि ताइ यमुनार तीरे,
दुर्गम गिरिमाझे।
मानुष हतेछि पाषाणेर कोले,
मिशातेछि गान नदी-कलरोले,

गड़ितेछि मन आपनार मने,
योग्य हतेछि काजे ॥

एमनि केटेछे द्वादश बरष,
आरो कतदिन हबे,
चारिदिक हते अमर जीवन
विन्दु विन्दु करि आहरण
आपनार माझे आपनारे आमि
पूर्ण देखिब कबे ॥

कबे प्राण खुले बलिते पारिब—
पेयेछि आमार शेष।
तोमरा सकले एसो मोर पिछे,
गुरु तोमादेर सबारे डाकिछे,
आमार जीवने लभिया जीवन
जागो रे सकल देश ॥

नाहि आर भय, नाहि संशय,
नाहि आर आगु पिछु।
पेयेछि सत्य लभियाछि पथ,
सरिया दाँड़ाय सकल जगत्,

नाइ तार काछे जीवन मरण,
नाइ नाइ आर किछु ॥

हृदयेर माझे पेतेछि शुनिते
दैववाणीर मतो—
"उठिया दाँड़ाओ आपन आलोते,
ओइ चेये देखो कतदूर हते
तोमार काछेते धरा दिवे ब'ले
आसे लोक कत शत ॥

ओइ शोनो शोनो कल्लोल-ध्वनि,
छुटे हृदयेर धारा।
स्थिर थाको तुमि, थाको तुमि जागि'
प्रदीपेर मतो आलस तेयागि',
ए निशीथमाझे तुमि घुमाइले
फिरिया याइबे ता'रा ॥"

याओ तबे साहु, याओ रामदास,
फिरे याओ सखागण।

एसो देखि सबे याबार समय
बलो देखि सबे 'गुरुजीर जय,'
दुइ हात तुलि' बलो 'जय जय,
अलख निरञ्जन ॥'

२६ ज्येष्ठ १२९५ (सं० १९४५)

शेष शिक्षा

एकदिन शिखगुरु गोविन्द निर्जने
एकाकी भावितेछिला आपनार मने
आपन जीवन-कथा ; ये-संकल्पलेखा
अखण्ड सम्पूर्णरूपे दियेछिल देखा
यौवनेर स्वर्णपटे,—ये-आशा एकदा
भारत ग्रासियाछिल, से आजि शतधा,
से आजि संकीर्ण शीर्ण संशयसंकुल,
से आजि संकटमग्न। तबे ए कि भुल।
तबे कि जीवन व्यर्थ। दारुण द्विधाय
श्रान्त देहे क्षुब्धचित्ते आँधार सन्ध्याय

गोविन्द भाबितेछिल ; हेनकाले एसे
पाठान कहिल ताँरे, "याब चलि' देशे,
घोड़ा-ये किनेछ तुमि दाओ तार दाम।"
कहिल गोविन्द गुरु—"शेखजी सेलाम,
मूल्य कालि पाबे, आज फिरे याओ भाइ।"—
पाठान कहिल रोषे, "मूल्य आजइ चाइ।"
एत बलि' जोर करि' धरि' ताँर हात—
चोर बलि' दिल गालि। शुनि' अकस्मात्
गोविन्द बिजुलि-वेगे खुलि' निल असि,
पलके से पाठानेर मुण्ड गेल खसि' ;
रक्ते भेसे गेल भूमि। हेरि निज काज
माथा नाड़ि' कहे गुरु, "बुझिलाम आज
आमार समय गेछे। पाप तरवार
लङ्घन करिल आजि लक्ष्य आपनार
निरर्थक रक्तपाते। ए वाहुर 'परे
विश्वास घुचिया गेल चिरकाल तरे।
धुये मुछे येते हबे ए पाप ए लाज—
आज हते जीवनेर एइ शेष काज।"
पुत्र छिल पाठानेर वयस नवीन
गोविन्द लइला तारे डाकि'। रात्रि-दिन
पालिते लागिल तारे सन्तानेर मतो
चोखे चोखे। शास्त्र आर अस्त्रविद्या यत

आपनि शिखाल ता'रे। छेलेटिर साथे
वृद्ध सेइ वीरगुरु सन्ध्याय प्रभाते
खेलित छेलेर मतो। भक्तगण देखि'
गुरुरे कहिल आसि'—"ए की प्रभु ए की।
आमादेर शङ्का लागे। व्याघ्र-शावकेरे
यत यत्न करो, तार स्वभाव कि फेरे।
यखन से बड़ो हबे तखन नखर
गुरुदेव, मने रेखो, हबे-ये प्रखर।"
गुरु कहे, "ताइ चाइ, बाघेर बाच्छारे
बाघ ना करिनु यदि की शिखानु ता'रे।"

बालक युवक होलो गोविन्देर हाते
देखिते देखिते। छाया हेन फिरे साथे,
पुत्र हेन करे ताँर सेवा। भालबासे
प्राणेर मतन—सदा जेगे थाके पाशे
डान हस्त येन। युद्धे हये गेछे गत
शिखगुरु गोविन्देर पुत्र छिल यत,—
आज ताँर प्रौढ़काले पाठान-तनय
जुड़िया बसिल आसि' शून्य से-हृदय
गुरुजीर। बाजे-पोड़ा वटेर कोटरे
बाहिर हइते बीज पड़ि' वायुभरे

বৃক্ষ হয়ে বেড়ে বেড়ে কবে ওঠে ঠেলি',
বৃদ্ধ বটে ঢেকে ফেলে ডালপালা মেলি' ॥
একদা পাঠান কহে নমি' গুরু-পায়,
শিক্ষা মোর শেষ হোলো চরণকৃপায়,
এখন আদেশ পেলে নিজ ভুজবলে
উপার্জন করি গিয়া রাজসৈন্যদলে।"
গোবিন্দ কহিল তার পিঠে হাত রাখি'—
"আছে তব পৌরুষের এক শিক্ষা বাকি।"
পরদিন বেলা গেলে গোবিন্দ একাকী
বাহিরিলা,—পাঠানেরে কহিলেন ডাকি'—
"অস্ত্র হাতে এসো মোর সাথে।" ভক্তদল
"সঙ্গে যাব, সঙ্গে যাব" করে কোলাহল—
গুরু কন "যাও সবে ফিরে।"

দুই জনে
কথা নাই ধীরগতি চলিলেন বনে
নদীতীরে। পাথর-ছড়ানো উপকূলে,
বরষার জলধারা সহস্র আঙুলে
কেটে গেছে রক্তবর্ণ মাটি। সারি সারি
উঠেছে বিশাল শাল,—তলায় তাহারি
ঠেলাঠেলি ভিড় করে শিশু তরুদল
আকাশের অংশ পেতে। নদী হাঁটুজল

फटिकेर मतो स्वच्छ—चले एकधारे
गेरुया बालिर किनाराय। नदी-पारे
इशारा करिला गुरु—पाठान दाँड़ाल।
निबे-आसा दिवसेर दग्ध राङा आलो
बादुड़ेर पाखासम दीर्घ छाया जुड़ि'
पश्चिम प्रान्तर-पारे चलेछिल उड़ि'
निःशब्द आकाशे। गुरु कहिला पाठाने—
"मामुद हेथाय एसो, खोँड़ो एइखाने।"
उठिल से-बालु खुँड़ि' एकखण्ड शिला
अङ्कित लोहित रागे। गोविन्द कहिला—
"पाषाणे एइ-ये राङा दाग, ए तोमार
आपन बापेर रक्त। एइखाने तार
मुण्ड फेलेछिनु केटे, ना शुधिया ऋण,
ना दिया समय। आज आसियाछे दिन
रे पाठान, पितार सुपुत्र हओ यदि
खोलो तरवार,—पितृघातकेरे वधि',
उष्ण रक्त-उपहारे करिबे तर्पण
तृषातुर प्रेतात्मार।"—बाघेर मतन
हुंकारिया लम्फ दिया रक्तनेत्रे वीर
पड़िल गुरुर 'परे—गुरु रहे स्थिर
काठेर मूर्तिर मतो। फेलि अस्त्रखान
तखनि चरणे ताँर पड़िल पाठान।

कहिल, "हे गुरुदेव, लये शयताने
कोरो ना एमनतरो खेला। धर्म जाने
भूलेछिनु पितृरक्तपात ;—एकाधारे
पिता गुरु बन्धु ब'ले जेनेछि तोमारे
एतदिन। छेये थाक् मने सेइ स्नेह,
ढाका प'ड़े हिंसा याक म'रे। प्रभु देह
पदधूलि।"—एत बलि वनेर बाहिरे
ऊर्ध्वश्वासे छुटे गेल, ना चाहिल फिरे,
ना थामिल एकवार। दुटि विन्दु जल
भिजाइल गोविन्देर नयन युगल।
पाठान सेदिन हते थाके दूरे दूरे।
निराला शयन घरे जागाते गुरुरे
देखा नाहि देय भोर वेला। गृहद्वारे
अस्त्रहाते नाहि थाके राते। नदी पारे
गुरु साथे मृगयाय नाहि याय एका।
निर्जने डाकिले गुरु देय ना से देखा॥
एकदिन आरम्भिल शतरञ्ज खेला
गोविन्द पाठान साथे। शेष होलो वेला
ना जानिते केह। हार मानि बारे बारे
मातिछे मामुद। सन्ध्या हय, रात्रि बाड़े।
सङ्गीरा ये यार घरे चले गेल फिरे।
झाँ झाँ करे राति। एकमने हेँटशिरे

पाठान भाविछे खेला। कखन हठात्
चतुरङ्ग बल छुँड़ि' करिल आघात
मामुदेर शिरे गुरु,—कहे अट्टहासि'
"पितृघातकेर साथे खेला करे आसि'
एमन ये कापुरुष, जय हवे तार ?"—
तखनि विद्युत्-हेन छुरि खरधार
खाप हते खुलि' लये गोविन्देर बुके
पाठान बिँधिया दिल। गुरु हासि-मुखे
कहिलेन—"एतदिने होलो तोर बोध
की करिया अन्यायेर लय प्रतिशोध।
शेष शिक्षा दिये गेनु—आजि शेषबार
आशीर्वाद करि तोरे हे पुत्र आमार।"

६ कार्तिक, १३०६ (सं० १६५६)

नकल गड़

(राजस्थान)

जलस्पर्श करव ना आर—
चितोर रानार पण—
बुँदिर केल्ला माटिर 'परे
थाकबे यतक्षण।—

"की प्रतिज्ञा, हाय महाराज
मानुषेर या असाध्य काज
केमन क'रे साधबे ता आज,"—
कहेन मन्त्रिगण।
कहेन राजा, "साध्य ना हय
साधब आमार पण॥"
बुँदिर केल्ला चितोर होते
योजन तिनेक दूर।
सेथाय हारावंशी सबाइ
महा महा शूर।
हामु राजा दिच्छे थाना
भय कारे कय नाइको जाना,
ताहार सद्य प्रमाण राना
पेयेछेन प्रचुर।
हारावंशीर केल्ला बुँदि
योजन तिनेक दूर॥
मन्त्री कहे युक्ति करि'—
"आजके सारारात्ति
माटि दिये बुँदिर मतो
नकल केल्ला पाति।
राजा एसे आपन करे
दिबेन भेङे धूलिर 'परे,

नइले शुधु कथार तरे
हवेन आत्मघाती ।"—
मन्त्री दिल चितोर माझे
नकल केल्ला पाति' ॥
कुम्भ छिल रानार भृत्य
हारावंशी वीर,
हरिण मेरे आसछे फिरे
स्कन्धे धनुक तीर ।
खबर पेये कहे—"के रे
नकल बुँदि केल्ला मेरे
हारावंशी राजपुतेरे
करबे नतशिर ।
नकल बुँदि राखब आमि
हारावंशी वीर ॥"
माटिर केल्ला भाङते आसेन
राना महाराज ।
"दूरे रह"—कहे कुम्भ'
गर्जे येन वाज ।
बुँदिर नामे करबे खेला,
सइब ना सेइ अवहेला,—
नकल गड़ेर माटिर ढेला,
राखब आमि आज ।

कहे कुम्भ—"दूरे रह
　　राना महाराज ॥"
भूमिर 'परे जानु पाति'
　　तुलि' धनुःशर
एका कुम्भ रक्षा करे
　　नकल बुँदिगड़ ।
रानार सेना घिरि' तारे
मुण्ड काटे तरवारे
खेलागड़ेर सिंहद्वारे
　　पड़ल भूमि-'पर ।
रक्ते ताहार धन्य होलो
　　नकल बुँदिगड़ ।

७ कार्तिक, १३०६ (सं० १९५६)

होरिखेला

(राजस्थान)

पत्र दिल पाठान केसर खाँरे
　　केतुन हते भूनाग राजार रानी,—
"लड़ाइ करि' आश मिटेछे मिञा ?
वसन्त याय चोखेर उपर दिया,
एसो तोमार पाठान सैन्य निया
　　होरि खेलब आमरा राजपुतानी ।"

युद्धे हारि' कोटा शहर छाड़ि'
केतुन हते पत्र दिल रानी ॥
पत्र पड़ि' केसर उठे हासि'
मनेर सुखे गोँफे दिल चाड़ा ।
रङ्गिन देखे पागड़ि परे माथे,
सुर्मा आँकि' दिल आँखिर पाते,
गन्धभरा रुमाल निल हाते
सहस्रबार दाड़ि दिल झाड़ा ॥
पाठान-साथे होरि खेलबे रानी
केसर हासि' गोँफे दिल चाड़ा
फागुन मासे दखिन हते हाओया
वकुलवने माताल हये एल ।
बोल धरेछे आमेर वने वने,
भ्रमरगुलो के कार कथा शोने,
गुनगुनिये आपन मने मने
घुरे घुरे बेड़ाय एलोमेलो ।
केतुनपुरे दले दले आजि
पाठान-सेना होरि खेलते एल ॥

केतुनपुरे राजार उपवने
तखन सबे झिकिमिकि वेला ।

पाठानेरा दाँड़ाय वने आसि'
मूलतानेते तान धरेछे बाँशि,
एल तखन एकशो रानीर दासी
　　राजपुतानी करते होरिखेला ;
रवि तखन रक्तरागे राङा,
　　सबे तखन झिकिमिकि वेला ॥
पाये पाये घाघरा उठे दुले'
　　ओड़ना ओड़े दक्षिणे वातासे ।
डाहिन हाते बहे फागेर थारि,
नोविबन्धे झुलिछे पिचकारी,
वामहस्ते गुलाब भरा झारि
　　सारि सारि राजपुतानी आसे ।
पाये पाये घाघरा उठे दुले'
　　ओड़ना ओड़े दक्षिणे बातासे ॥
आँखिर ठारे चतुर हासि हेसे
　　केसर तवे कहे काछे आसि',
"बेचे एलेम अनेक युद्ध करि'
आजके बुझि जाने-प्राणे मरि ।"
शुने' रानीर शतेक सहचरी
　　हठात् सबे उठल अट्टहासि' ।
राङा पागड़ि हेलिये केसर खाँ
　　रङ्ग भरे सेलाम करे आसि, ॥

शुरु होलो होरिर मातामाति,
उड़तेछे फाग राङा सन्ध्याकाशे।
नव बरन धरल वकुल फुले,
रक्तरेणु भरल तरुमूले,
भये पाखि कूजन गेल भुले'
राजपुतानीर उच्च उपहासे।
कोथा हते राङा कुज्भटिका
लागल येन राङा सन्ध्याकाशे॥
चोखे केन लागछे नाको नेशा,
मने मने भावछे केसर खाँ॥
वक्ष केन उठछे नाको दुलि'।
नारीर पाये बाँका नूपुरगुलि
केमन येन बलछे बेसुर बुलि,
तेमन क'रे काँकन बाजछे ना।
चोखे केन लागछे ना को नेशा।—
मने मने भावछे केसर खाँ॥
पाठान कहे—"राजपुतानीर देहे
कोथाओ किछु नाइ कि कोमलता।
बाहुयुगल नय मृणालेर मतो,
कण्ठस्वरे वज्र लज्जाहत,
बड़ो कठिन शुष्क स्वाधीन यत
मञ्जरीहीन मरुभूमिर लता।"—

पाठान भाबे देहे किंवा मने
राजपुतानीर नाइको कोमलता ॥
तान धरिया इमन भूपालिते
बाँशि बेजे उठल द्रुतताले ।
कुण्डलेते दोले मुक्तामाला,
कठिन हाते मोटा सोनार बाला,
दासीर हाते दिये फागेर थाला
रानी वने एलेन हेनकाले ।
तान धरिया इमन भूपालिते
बाँशि तखन बाजछे द्रुतताले ॥
केसर कहे—"तोमारि पथ चेये
दुटि चक्षु करेछि प्राय काना ।"
रानी कहे—"आमारो सेइ दशा ।"
एकशो सखी हासिया विवशा,—
पाठानपतिर ललाटे सहसा
मारेन रानी काँसार थालाखाना ।
रक्तधारा गड़िये पड़े वेगे
पाठानपतिर चक्षु होलो काना ।
विना मेघे वज्ररवेर मतो
उठल बेजे काड़ा नाकाड़ा ।
ज्योत्स्नाकाशे चमके ओठे शशी,
झनझनिये झिकिये ओठे असि,

सानाइ तखन द्वारेर काछे बसि'
गभीर सुरे धरल कानाड़ा।
कुञ्जवनेर तरु-तले-तले
उठल बेजे काड़ा–नाकाड़ा॥
बातास बेये ओड़ना गेल उड़े,
पड़ल ख'से घाघरा छिल यत।
मन्त्रे येन कोथा हते के रे
बाहिर होलो नारीर सज्जा छेड़े,
एकशत वीर घिरल पाठानेरे
पुष्प हते एकशो सापेर मतो।
स्वप्नसम ओड़ना गेल उड़े,
पड़ल ख'से घाघरा छिल यत॥
ये-पथ दिये पाठान एसेछिल
से–पथ दिये फिरल ना को ता'रा।
फागुन-राते कुञ्ज विताने
मत्त कोकिल विराम ना जाने,
केतुनपुरे बकुल बागाने
केसर खाँयेर खेला होलो सारा।
ये–पथ दिये पाठान एसेछिल
से-पथ दिये फिरल ना को ता'रा॥

६ कार्तिक, १३०६ (सं० १९५६)

विवाह

(राजस्थान)

प्रहरखानेक रात हयेछे शुधु
घन घन बेजे ओठे शाँख ।
वर-कन्या येन छविर मतो
आँचलबाँधा दाँड़िये आँखि-नत,
जानला खुले पुराङ्गना यत
देखछे चेये घोमटा करि फाँक ।
वर्षाराते मेघेर गुरुगुरु—
तारि सङ्गे बाजे बियेर शाँख ॥

ईशान कोणे थम्के आछे हाओया,
मेघे मेघे आकाश आछे घेरि' ।
सभाकक्षे हाजार दीपालोके
मणिमालाय झिलिक हाने चोखे ;
सभार माझे हठात् एल ओ-के,
बाहिर द्वारे बेजे उठल भेरी ।
चमके ओठे सभार यत लोके,
उठे दाँड़ाय वर-कनेरे घेरि' ॥

टोपर-परा मैत्रि-राजकुमारे
कहे तखन माड़ोयारेर दूत—
"युद्ध बाधे विद्रोहोदेर सने,
रामसिंह राना चलेन रणे,
तोमरा एसो ताँरि निमन्त्रणे
ये ये आछ मर्तिया राजपुत।"
"जय राना रामसिङेर जय—"
गर्जि' उठे माड़ोयारेर दूत॥

"जय राना रामसिङेर जय"—
मैत्रिपति ऊर्ध्वस्वरे कय।
कनेर वक्ष कँपे ओठे डरे,
दुटि चक्षु छल छल करे,
वरयात्री हाँके समस्वरे—
"जय राना रामसिङेर जय।"
"समय नाहि मैत्रि-राजकुमार"—
महारानार दूत उच्चे कय॥

वृथा केन ओठे हुलुध्वनि,
वृथा केन बेजे ओठे शाँख।
बाँधा आँचल खुले फेले वर,
मुखेर पाने चाहे परस्पर,

कहे—"प्रिये, निलेम अवसर
एसेछे ऐ मृत्यु-सभार डाक।"
वृथा एखन ओठे हुलुध्वनि,
वृथा एखन बेजे ओठे शाँख॥

वरेर वेशे टोपर परि' शिरे
घोड़ाय चड़ि' छुटे राजकुमार।
मलिन मुखे नम्र नतशिरे,
कन्या गेल अन्तःपुरे फिरे,
हाजार बाति निबल धीरे धीरे
राजार सभा होलो अन्धकार।
गलाय माला टोपर-परा शिरे
घोड़ाय चड़ि' छुटे राजकुमार॥

माता केँदे कहेन—"वधू-वेश
खुलिया फेल् हाय रे हतभागी।"
शान्त मुखे कन्या कहे माये—
"केँदो ना मा, धरि तोमार पाये,
वधूसज्जा थाक् मा आमार गाये
मैत्रिपुरे याइब ताँर लागि'।"
शुने' माता कपाले कर हानि'
केँदे कहेन—"हाय रे हतभागी॥"

ग्रहविप्र आशीर्वाद करि'
धानदूर्वा दिल ताहार माथे।
चड़े कन्या चतुर्दोला-'परे,
पुरनारी हुलुध्वनि करे,
रङ्गिन वेशे किङ्करी किङ्करे
सारि सारि चले बालार साथे।
माता आसि' चुमो खेलेन मुखे,
पिता आसि' हस्त दिलेन माथे॥

निशीथ-राते आकाश आलो करि'
के एल रे मैत्रिपुरद्वारे।
"थामाओ बाँशि" कहे, "थामाओ बाँशि—
चतुर्दोला नामाओ रे दासदासी,
मिलेछि आज मैत्रिपुरवासी
मैत्रिपतिर चिता रचिबारे।
मैत्रिराजा युद्धे हत आजि,
दुःसमये का'रा एले द्वारे।"

"बाजाओ बाँशि ओरे बाजाओ बाँशि"
चतुर्दोला हते वधू बले—
"एबार लग्न आर हबे ना पार,
आँचले गाठ खुलबे ना तो आर,

शेषेर मन्त्र उच्चारो एइबार
श्मशान-सभाय दीप्त चितानले ।
बाजाओ बाँशि ओरे बाजाओ बाँशि"—
चतुर्दोला हते वधू बले ।

वरेर वेशे मतिर माला गले
मैत्रिपति चितार 'परे शुये ।
दोला हते नामल आसि' नारी,
आँचल बाँधि' रक्तवासे ताँरि
शियर-'परे बैसे राजकुमारी
वरेर माथा कोलेर 'परे थुये ।
निशीत-राते मिलनसज्जा-परा
मैत्रिपति चितार 'परे शुये ॥

घन घन जागल हुलुध्वनि,
दले दले आसे पुराङ्गना ।
कय पुरोहित—"धन्य सुचरिता"
गाहिछे भाट—"धन्य मृत्युजिता,"
धूधू क'रे ज्वले उठल चिता,—
कन्या ब'से आछेन योगासना ।
जयध्वनि ओठे श्मशान माझे,
हुलुध्वनि करे पुराङ्गना ॥

११ कार्तिक, १३०६ (सं० १९५६)

বিচারক*

पुण्य नगरे रघुनाथ राओ
पेशोया नृपति वंश,—
राजासने उठि' कहिलेन वीर—
"हरण करिब भार पृथिवीर,
मैसुरपति हैदरालिर
दर्प करिब ध्वंस।"

देखिते देखिते पूरिया उठिल
सेनानी आशि सहस्र।
नाना दिके दिके नाना पथे पथे
माराठार यत गिरिदरी हते
वीरगण येन श्रावणेर स्रोते
छुटिया आसे अजस्र॥

---

* पण्डित शम्भुचन्द्र-विद्यारत्न प्रणीत चरितमाला हइते गृहीत। ऐकवर्थ साहेब प्रणीत Ballads of the Marathas नामक ग्रन्थे रघुनाथेर भ्रातुष्पुत्र नारायण राओयेर हत्या सम्बन्धे प्रचलित माराठि गाथार इंरेजि अनुवाद प्रकाशित हइयाछे।

उड़िल गगने विजय पताका,
ध्वनिल शतेक शङ्ख ।
हुलुरव करे अङ्गना सबे
माराठा नगरी काँपिल गरबे,
रहिया रहिया प्रलय आरवे
बाजे भैरव डङ्क ॥

धुलार आड़ाले ध्वज-अरण्ये
लुकाल प्रभाय-सूर्य ।
रक्त अश्वे रघुनाथ चले,
आकाश बधिर जय-कोलाहले,
सहसा येन की मन्त्रेर बले
थेमे गेल रणतूर्य ॥

सहसा काहार चरणे भूपति
जानाल परम दैन्य ।
समरोन्मादे छुटिते छुटिते
सहसा निमेषे कार इङ्गिते
सिंह-दुयारे थामिल चकिते
आशि सहस्र सैन्य ।

ब्राह्मण आसि' दाँड़ाल समुखे
न्यायाधीश रामशास्त्री ।
दुइ वाहु ताँर तुलिया उधाओ,
कहिलेन डाकि',—रघुनाथ राओ,
नगर छाड़िया कोथा चले याओ,
ना ल'ये पापेर शास्ति ।"

नीरव हइल जय-कोलाहल,
नीरव समर-वाद्य ।
"प्रभु केन आजि'—कहे रघुनाथ—
"असमये पथ रुधिले हठात्
चलेछि करिते यवन निपात
योगाते यमेर खाद्य" ।

कहिल शास्त्री,—"वधियाछ तुमि
आपन भ्रातार पुत्रे ।
विचार ताहार ना हय य-दिन
ततकाल तुमि नह तो स्वाधीन,
वन्दी हयेछ अमोघ कठिन
न्यायेर विधान सूत्रे ।"

रुषिया उठिला रघुनाथ राओ,
कहिला करिया हास्य,—
"नृपति काहारो बाँधन ना माने,
चलेछि दोप्त मुक्त कृपाणे,
शुनिते आसिनि पथमाझखाने
न्याय-विधानेर भाष्य।"

कहिला शास्त्री—"रघुनाथ राओ
याओ करो गिये युद्ध।
आमिओ दण्ड छाड़िनु एबार,
फिरिया चलिनु ग्रामे आपनार,
विचारशालार खेलाघरे आर
ना रहिब अवरुद्ध।"

बाजिल शङ्ख, बाजिल डङ्क,
सेनानी धाइल क्षिप्र।
छाड़ि दिया गेला गौरव पद,
दूरे फेलि दिला सब सम्पद,
ग्रामेर कुटीरे चलि गेला फिरे'
दीन दरिद्र विप्र।

४ठा अग्रहायण, १३०६ (४ मार्गशीर्ष, सं० १९५६)

पणरक्षा

"माराठा दस्यु आसिछे रे ए
करो करो सबे साज।"
आजमीर गड़े कहिला हाँकिया
दुर्गेश दुमराज।
वेला दु-पहरे ये-याहार घरे
सें किछे जोयारि रुटि,
दुर्ग-तोरणे नाकाड़ा बाजिते
बाहिरे आसिल छुटि'।
प्राकारे चड़िया देखिल चाहिया
दक्षिणे बहुदूरे
आकाश जुड़िया उड़ियाछे धुला
माराठि अश्वखुरे।
"माराठार यत पतङ्गपाल
कृपाण-अनले आज
झाँप दिया पड़ि' फिरे नाको येन"—
गर्जिला दुमराज॥
माड़ोयार हते दूत आसि' बले—
"वृथा ए सैन्य साज।

हेरो ए प्रभुर आदेशपत्र
दुर्गेश दुमराज ।
सिन्दे आसिछे सङ्गे ताँहार
फिरिङ्गि सेनापति—
सादरे ताँदेर छाड़िबे दुर्ग,
आज्ञा तोमार प्रति ।
विजयलक्ष्मी हयेछे विमुख
विजय सिंह-'परे ;
विना संग्रामे आजमीर गड़
दिबे माराठार करे ।"
"प्रभुर आदेशे वीरेर धर्मे
विरोध बाधिल आज"—
निःश्वास फेलि कहिला कातरे
दुर्गेश दुमराज ॥

माड़ोयार दूत करिल घोषणा—
"छाड़ो छाड़ो रण-साज ।"
रहिल पाषाण मुरति समान
दुर्गेश दुमराज ।
वेला याय याय, धुधु करे माठ
दूरे दूरे चरे धेनु,

तरुतल-छाये सकरुण रवे
बाजे राखालेर वेणु ।
"आजमोर गड़ दिला यबे मोरे
पण करिलाम मने—
प्रभुर दुर्ग शत्रुर करे
छाड़िब ना ए जीवने ।
प्रभुर आदेशे से सत्य हाय
भाङिते हबे कि आज ।"
एतेक भाबिया फेले निःश्वास
दुर्गेश दुमराज ॥

राजपुत सेना सरोषे शरमे
छाड़िल समर-साज ।
नीरवे दाँड़ाये रहिल तोरणे
दुर्गेश दुमराज ।
गेरुया-वसना सन्ध्या नामिल
पश्चिम माठ पारे ;
माराठि सैन्य धुला उड़ाइया
थामिल दुर्गद्वारे ।
"दुयारेर काछे के ऐ शयान,
ओठो ओठो खोलो द्वार ।"

नाहि शोने केह,—प्राणहीन देह
साड़ा नाहि दिल आर।
प्रभुर कर्मे वीरेर धर्मे
विरोध मिटाते आज
दुर्ग दुयारे त्यजियाछे प्राण
दुर्गेश दुमराज॥

अग्रहायण, १३०६ (मार्गशीर्ष, सं० १९५६)

वर्णानुक्रमिक सूची

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६	६	यार	याँर
८	३	दिबे	देबे
९	१	ओहे	“ओहे
१०	११	आमारे	“आमारे
१०	१७	हं०	सं०
१७	१६	विक्	धिक्
२५	३	तिमिर	तिमिरे
३१	९	महावस्तत्रदान	महावस्त्वदान
३६	४	तूण	तूर्ण
३६	१५	पक्क	पक्क
४०	८	मोरे ?	मोरे ?”
४६	११	घूम	धूम
५२	१३	कल्पद्रमावदान	कल्पद्रुमावदान
५३	३	क्षुधार्त	“क्षुधार्त
६३	७	दव	तव
६४	१	मानो	मान’
६४	३	गदी	नदी
७५	६	साजा।	साजा।”

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७६	७	याओ	"याओ
८१	१०	पेयेछि	'पेयेछि
८२	२	किछु ॥	किछु ॥'
८३	४	निरंजन	निरंजन' ॥
८६	४	शिक्षा	"शिक्षा
८६	१६	जलस्पर्श	"जलस्पर्श
८६	१६	आर	आर"
८६	१८	बुँदिर	"बुँदिर
८६	१६	यतक्षण	यतक्षण"
६१	१७	कुम्भ'	कुम्भ,
६१	१६	बुँदिर	"बुँदिर
६१	२२	आज ।	आज ।"
१०१	२	धानदूर्वा	धानदूर्वा
१०२	११	निशीत	निशीथ
१०४	८	प्रभाय	प्रभात
१०५	४	रघुनाथ	"रघुनाथ